

संजय की कलम से ..

सीखने की प्रवृत्ति और नम्रता

आध्यात्मिक जीवन में प्रगति रुक जाने का एक बहुत बड़ा कारण है – धीरे-धीरे सीखने की प्रवृत्ति का मंद पड़ जाना। जब व्यक्ति योगी जीवन के पथ पर पग धरता है तब प्रारंभ में तो उसे एक धुन-सी लग जाती है। जीवन को पलट डालने के लिए वह उत्साही हो उठता है। उसके मन में यह संकल्प समर्थ बन जाता है कि योग के उच्च शिखर पर चढ़ जाना है परंतु जब वह कुछ सीख जाता है, थोड़ा-बहुत अन्य लोगों से आगे भी निकल जाता है या उसे योग के कुछ अच्छे अनुभव भी हो जाते हैं, तब वह स्वयं को अनुभवी या योग में शिक्षित मानकर चलने लगता है, आगे सीखने में उसकी पूर्ववत् रुचि नहीं रहती।

उसका एक कारण यह भी होता है कि वह दूसरे योगाभ्यासियों में कई बार कोई जलवा नहीं देखता बल्कि उन्हें भी कहीं-न-कहीं रुका हुआ देखता है या वह स्वयं को ही समझदार मानकर दूसरों से योग-चर्चा करने, अनुभव का लेन-देन करने, उनसे अपनी प्रगति के लिये कुछ प्रकाश पाने की कामना ही नहीं करता। सूक्ष्म रूप में उसमें एक अहंकार-सा होता है जिसका कई बार उसे पता भी नहीं रहता। वह अब यह भी नहीं सोचता कि अब यदि शरीर छूट जायेगा तो क्या गति होगी, क्यों न किसी वरिष्ठ योगी से कुछ

और लाभ ले लें? वह स्वयं को सर्व प्रकारेण कुशल मानने लग जाता है और अपनी कमियों को छिपाकर, दबाकर या यों ही एक ओर करके रख लेता है। वह सोचता है कि 'कमियाँ तो सभी में हैं।' इस प्रकार स्वयं को 'तीस मार खान' मानकर वह इतना तो गर्व के गर्त में धँस जाता है कि यदि उसे कोई हित-कामना करके दलदल से निकालना भी चाहे तो वह उसे अपने से भी कम श्रेणी का या सम-श्रेणी का मानकर उसकी नसीहत को ही उड़ा देता है। परिणाम यह होता है कि पहले तो कोई, चाहे उससे वरिष्ठ ही क्यों न हो, उसे कुछ हित-मंगल की बात कहने में ही सकुचाता है; यदि कह भी दे तो वह उसे 'हस्तक्षेप', 'अनाधिकार चेष्टा', 'अनुचित' या 'व्यर्थ की बात' मानता है। वह या तो समझता है कि 'यह बात तो मुझे भी मालूम थी, यह कौन-सी नई बात है' अथवा 'यह कमजोरी तो सभी में है, केवल मुझमें थोड़े ही है', या कि 'केवल मुझे ही यह शिक्षा क्यों दी जाती है, मुझे समझाने वाला पहले अपनी भूल तो ठीक करे..।' इस प्रकार की सारी प्रतिक्रिया सूक्ष्म अभिमान ही की कोपलें, कांटे और जहरीले पत्ते ही तो हैं परंतु वह इन्हें ही अपनी बुद्धिमता मानकर सदबुद्धि के मार्ग पर आगे अनुभव पाने से वंचित रह जाता है। ❖

अमृत-सूची

◆ कर्मगति	
(सम्पादकीय).....	2
◆ प्रश्न हमारे, उत्तर आपके.....	5
◆ पुरुषोत्तम संगमयुग में.....	7
◆ 'पत्र' संपादक के नाम.....	10
◆ तुम मुझे विकार दो, मैं तुम्हें.....	11
◆ दो शब्द अभिभावकों से.....	12
◆ बाबा मिला तो सब कुछ	15
◆ डिप्रेशन: जानकारी और.....	16
◆ नशा: एक सामाजिक.....	18
◆ दुआओं का बल.....	20
◆ यह भी बदल जायेगा	21
◆ परिस्थिति: वरदान या	22
◆ संशय के बादल छंट गये.....	24
◆ शान्ति और विकास	26
◆ सचित्र सेवा समाचार.....	28
◆ आवश्यक सूचना.....	30
◆ मुसकराने की आदत डालिए	31
◆ सचित्र सेवा समाचार.....	32

जुलाई मास से

नये सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

प्रकाशन सामग्री से

संबंधित सूचना

ज्ञानामृत कार्यालय में भेजी जाने वाली प्रकाशन सामग्री (लेख, कविता, गीत, अनुभव, संस्मरण, पत्र आदि) के साथ कृपया अपना पूरा पता, सेवाकेन्द्र का नाम तथा मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

कर्मगति

श्री मद्भगवद् गीता में कहा गया है, 'गहना कर्मणो गतिः' अर्थात् कर्मों की गति गहन है। किस कर्म का कब, क्या फल निकलेगा, इसका बहुत स्पष्ट गणित जनसाधारण के मन में नहीं होता जिस कारण कई बार मन भ्रमित होकर अनेक प्रकार के प्रश्न भी उठाने लगता है। एक प्रश्न, जो आमतौर पर उठाया जाता है वह यह है कि कलियुग में अच्छे लोग दुखी क्यों हैं और पापी लोग सुखी क्यों हैं? या फिर यह भी कहा जाता है कि पापी की आयु लंबी और पुण्यात्मा का बुलावा जल्दी क्यों हो जाता है? एक प्रचलित भजन में भी इसी प्रकार के प्रश्न उठाए गए हैं—

कर्मों की गति न्यारी,
उधो, कर्मों की गति न्यारी,
नदियाँ कर दी मीठी-मीठी,
उदधि कर दी खारी
बगुला कर दिया धोला-धोला,
कोयल कर दी कारी।

इसका भावार्थ यह है कि नदियाँ तो मीठी कर दी जबकि उदधि (सागर) का जल नमकीन है। बगुला (कपटी) सफेद है और कोयल (मधुरस्वरा) काली है। भजन में स्वरूप और कर्म के विरोधाभास को कर्मगति से जोड़ा गया है।

रामायण में कर्मफल

भारतीय समाज में ईश्वरीय

कर्त्तव्य की यादगार रामायण की कथा बहुत प्रचलित है। कथा के प्रारंभ में दिखाया जाता है कि राजा दशरथ शौक-वश शिकार खेलते हैं। शिकार खेलना जघन्य पाप है। शिकार यदि पेट के लिए हो तो उसकी सीमा होती है परन्तु खेल के लिए, मनोरंजन के लिए हो तो हिंसा की कोई सीमा ही नहीं रहती है। इसी असीमित हिंसा का दंश अनजाने में ही श्रवणकुमार को भी चुभ जाता है। जानवर के भ्रम में, शब्दभेदी बाण पानी भरते श्रवणकुमार को जा लगता है और मौके पर ही उसके सहित माता-पिता भी परलोक सिधार जाते हैं। पाप, पाप ही होता है, जाने में किया जाये या अनजाने में। इस दुष्कर्म से श्रापित राजा महल को लौट आते हैं और कुछ ही दिनों के बाद चार सुन्दर कुमारों के पिता बन जाते हैं।

इस घटनाक्रम को सरसरी निगाह से देखने वाला व्यक्ति कह सकता है कि यह भी कैसा न्याय है? तीन की हत्या के निमित्त राजा दशरथ को चार सुन्दर कुमारों की प्राप्ति हो गई! हो सकता है, किसी को यह भी भ्रम हो जाए कि किसी निरपराध की बलि करने से शायद भगवान प्रसन्न हो जाते हैं इसीलिए तो भगवान ने उन्हें चार पुत्र प्रदान कर दिए। समाज में, पुत्र-प्राप्ति के लिए चोरी-छिपे दी जाने वाली नर

बलि, शिशु बलि और प्रत्यक्ष रूप में दी जाने वाली बकरा-भैंसा आदि की बलि किसकी परिचायक है? इसी भ्रम या अंधविश्वास की ही तो परिचायक है।

परन्तु कोई भी बीज बोते ही फल नहीं देने लगता, समय लगता है। कांटे का पौधा भी निर्धारित समय के बाद ही दुख देता है, प्रारंभ में तो वह भी कोमल और आकर्षक ही होता है। राजा दशरथ निःसंतान थे। श्राप के फल के रूप में उन्हें कुमारों की प्राप्ति हुई थी। श्राप रूपी बीज से निकला पौधा अभी प्रारंभिक रूप में है इसलिए राजा को इन चारों राजकुमारों से बेहद खुशी मिल रही है, उसके बाद चार राजकुमारियों से उनकी शादी हुई तो खुशी और बढ़ गई।

परन्तु कर्म फल अभी पका नहीं है। फल पकने पर ही पेड़ से गिरता है, कच्चा नहीं। खाने लायक भी तभी बनता है। कर्म तब पका जब रामचन्द्र जी के राजतिलक का समय आया। असंतुष्ट केकैयी के दो वरदानों के रूप में फल राजा दशरथ की झोली में आ गिरा। कर्म का फल असमय ही उनके प्राण हर ले गया। ऐसा प्रतापी राजा असमय क्यों गया? क्योंकि श्रवणकुमार की हत्या का फल था यह। कर्मफल रूप उनके तीन अति प्रिय जन असहनीय पीड़ा देकर उनकी

आँखों से दूर हो गए। आज के समय में हत्याएँ, आत्महत्याएँ, अकाल मृत्यु, बीमारियाँ हमें परेशान कर रही हैं परन्तु ये सब हमारे ही वर्तमान या भूतकाल के दुष्कर्मों के परिणाम हैं। यदि हमारे खेत में से आलू निकल रहे हैं तो इसका अर्थ क्या है? कभी न कभी हमने आलू बोए थे ज़रूर। हो सकता है हमें याद ना हो, हम डालकर भूल गए तो भी बीज अपनी क्रिया करता रहेगा और एक दिन फल अवश्य देगा। बीज गलती से या भूल से या लापरवाही से, मिट्टी में कैसे भी डला, वह फलेगा। इसी प्रकार कर्म चाहे जिस मनोवृत्ति से किया गया, वह फलेगा।

संसार है दुखों का

सुपर बाज़ार

वर्तमान संसार दुखों का सुपर बाज़ार है। हर तरफ विभिन्न प्रकार के दुख सजे हैं और आवाज़ें आ रही हैं, दुख ले लो, दुख ले लो। समझदार आदमी सुने को अनसुना कर और देखे को अनदेखा कर निकल जाता है जबकि मूर्ख व्यक्ति पल्ला उलझा लेता है, पल्ले में दुख भर लेता है, फिर कहता है, हाय! मेरे पास यह दुख क्यों आया? आया नहीं, हमने लिया। अतः दुख मिलने का दूसरा कारण यह है कि हम दुख ले लेते हैं।

दुख लेने वाला,

दुख देगा भी

जो चीज़ जिससे भरी होती है

उसमें से वही निकलती है। मटका शहद से भरा हो तो शहद बाहर निकलेगा, ज़हर से भरा हो तो ज़हर बाहर निकलेगा। जो व्यक्ति दुख दे रहा है, ज़रूर वह दुख से भरा मटका है, उसमें से वही बाहर निकल रहा है पर सवाल यह है कि उसके पास यह दुख आया कहाँ से? उसने इकट्ठा किया, कुछ देखकर, कुछ सुनकर अर्थात् इंद्रियों के माध्यम से दुख का संग्रह कर मन का मटका दुख से भर लिया। फिर जैसे बर्फ को छूने मात्र से ठंडक आ जाती है, कोयले को छूने मात्र से जलन हो जाती है इसी प्रकार दुख से भरे व्यक्ति के संपर्क मात्र से दुख के छींटे लगने शुरू हो जाते हैं तो क्या हम छींटे खाते रहें? नहीं। हमारा काम रहम कर उस मटके को भी उलट देना है। दुख को सुख में बदलने की कला को यहाँ काम में लगाना है।

दुख का एक अन्य कारण है हमारे द्वारा लगाया जाने वाला अनुमान। कई बार आत्मशक्ति की कमी के कारण, बात की पूरी जांच-पड़ताल किए बिना ही हम कुछ का कुछ सोच बैठते हैं। जैसे कि एक बार एक घर में नई-नई बहू आई। वह शरीर से मोटी थी, सब उसे मोटी-मोटी कहने लगे। उस घर में एक मोटी बिल्ली भी कभी-कभार आ जाती थी और मौका पाकर दूध पीकर भाग जाती थी। वह भी मोटी के नाम से प्रसिद्ध थी। नई बहू को उसकी इस प्रसिद्धि का ज्ञान नहीं था। एक दिन

जब मोटी बिल्ली ने दूध का पतीला साफ कर दिया और घर के लोगों ने कहना शुरू किया कि आज तो मोटी सारा दूध पी गई तो नई बहू दुख में आंसू बहाने लगी। उसे लगा, इस घर में तो 'मोटी' मैं ही हूँ। मुझ पर ही इल्जाम लगाया जा रहा है पर मैंने तो दूध देखा तक नहीं, पीना तो दूर रहा। भेद खुला तो उसे भी हँसी आ गई। अनुमान हमारी चढ़ती कला में बाधक है। अनुमान लगाने वाला हनुमान (महावीर) नहीं बन सकता। अनुमान लगाना भी पाप है अतः अनुमान, शंका से बचें।

दुख को सुख में

बदलने की कला

एक बार एक जमादारनी रास्ते से गुज़र रही थी। उसके मन में दुविधा चल रही थी कि मैं पूरी तरह भगवान की बन जाऊँ या पूरी तरह संसार में ही खोई रहूँ या कुछ समय संसार के लिए निकालूँ और बचे हुए समय को भगवान में लगाऊँ। तभी सामने से एक महात्मा जी गुज़रे, उन्हें लगा, कहीं जमादारनी की असावधानी से उसका पल्ला उड़कर मुझे छू ना ले, अनर्थ हो जायेगा, मैं अपवित्र हो जाऊँगा इसलिए वे नफरत से दूर से ही चिल्लाए, हे जमादारनी, एक तरफ हट जा। विचारों में खोई जमादारनी को महात्मा का यह वचन वरदान जैसा लगा। उसकी दुविधा समाप्त हो गई। उसने भगवान को शुक्रिया अदा

करते हुए कहा, प्रभु, मैं एक तरफ हट गई, मैं आपकी बन गई, दो तरफ झूलने की अपनी वृत्ति को आज यहीं त्याग रही हूँ, बस अब एक आपका ही सहारा लिए जीवन व्यतीत करूँगी। जब हृदय स्वच्छ होता है तो दूसरे की नफरत की वाणी दुख देने के बजाय दुविधा हरने वाली बन जाती है। इसी को कहते हैं दुख को सुख में बदलना।

पिछला बदला या

नया हिसाब

कई बार प्रश्न उठता है कि कोई व्यक्ति यदि दुखी है तो वह पिछले कर्म का फल भोग रहा है या उसके साथ नया हिसाब बन रहा है? कोई किसी को दुख दे रहा है तो वह पिछला बदला ले रहा है या नया हिसाब बना रहा है? उत्तर स्पष्ट है। मान लो, कोई बच्चे की सौतेली माँ आ जाती है, दुखी करती है, अब इतने छोटे बच्चे ने तो ऐसा कुछ किया ही नहीं, बिना किए उसे पक्षपात, मार, अपमान झेलना पड़ता है, मतलब वो बच्चा पूर्व में किए कर्मों के अनुसार अनाथ हुआ और दुख भोग रहा है।

मेहनत का फल या

संचित फल

दूसरा प्रश्न यह भी उठता है कि जो प्राप्ति हुई, वह हमारी मेहनत का फल है या पूर्व का संचित है? इसको उदाहरण से समझेंगे। मान लीजिए कि एक व्यक्ति गर्मी की झुलस सहन करते हुए सुबह से शाम तक पत्थर

तोड़ता है और बदले में मात्र सौ रुपये पाता है। ये सौ रुपये उसकी मेहनत का फल है। एक दिन अचानक एक सेठ की नज़र उस पर पड़ती है, कहता है, भाई, दिल्ली में मेरा एक खाली मकान पड़ा है, तुम उसकी रखवाली और सफाई भी करो और एक हिस्से में रहो भी। मैं महीने के छह हजार रुपये तुझे दूँगा। यह मजदूर हाँ कर देता है। अब ये जो अचानक ठण्डी छाया में, पक्के मकान में बैठने का भाग्य मिला और साथ ही तनखाह लगभग दो गुनी मिलनी निश्चित हुई, यह पूर्व के किसी पुण्य का फल है। उस व्यक्ति के मन-चित्त पर भी नहीं थी, ऐसी प्राप्ति उसे अचानक हुई तो यह पूर्व का संचित नहीं तो और क्या है?

वर्तमान समय संगमयुग चल रहा है। भगवान अवतरित हो कर्मों की गहन गति समझा रहे हैं। भगवान कहते हैं, अपने को आत्मा समझ मुझ ज्योतिस्वरूप परमात्मा की मधुर स्मृति में मन लगाओ तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। यही राजयोग है। राजयोग के द्वारा पूर्व के अनेक जन्मों के कर्मबंधनों को समूल नष्ट किया जा सकता है। ईश्वरीय ज्ञान द्वारा हम सुख लेना और सुख देना सीख जाते हैं। जब पूर्व के पाप नष्ट हो जाते हैं और वर्तमान में दुख का लेन-देन बंद हो जाता है तो हम पूर्ण सुखी हो जाते हैं। राजयोग द्वारा प्राप्त स्पष्ट निर्णय शक्ति और परख शक्ति से हम

अनुमान और शंका आदि से भी बच जाते हैं।

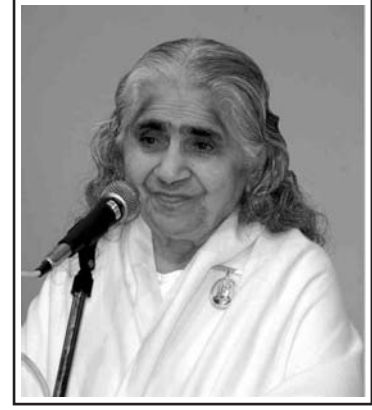
राजयोग अभ्यास में हम आत्म-स्वरूप में टिककर, ज्ञान-नेत्र से ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा शिव को निहारते हुए इस प्रकार रूहरिहान करते हैं – 'मैं आत्मा चैतन्य शक्ति हूँ... प्रकाश स्वरूप ज्योतिबिन्दु हूँ... मैं सत, चित, आनंद स्वरूप हूँ... इस शरीर से न्यारी अति सूक्ष्म शक्ति हूँ... शरीर की मालिक हूँ... मूल स्वरूप में शान्त हूँ... मैं संकल्प के विमान द्वारा अपने धाम परमधाम में पहुँच पिता परमात्मा के सम्मुख उपस्थित हूँ... यहाँ मुझे अपने शान्ति स्वधर्म का अनुभव हो रहा है... मेरे पापकटेश्वर पिता मेरे सम्मुख हैं... उनसे मुझे शान्ति, शक्ति, प्रेम की किरणों का अनुभव हो रहा है... पिता के संग में मैं अपने मूल शुद्ध रूप का अनुभव कर रही हूँ... मेरे द्वारा चारों ओर शान्ति और शुद्धि के प्रकंपन फैल रहे हैं... इन गुणों से सुशोभित हो मैं साकार शरीर में, साकार दुनिया में निमित्त भाव से कर्म करने के लिए लौट आई हूँ।' इस ईश्वरीय मिलन के अनुभव को साथ में रख कर्म करना इसी को राजयोग, कर्मयोग कहा जाता है। राजयोग से पूर्व के पाप कटते हैं और कर्मयोग से पुण्य का खाता जमा होता है।

— ब्र. कु. आत्म प्रकाश

सेवा का भाग्य प्राप्त होना ही सबसे बड़ा भाग्य है

प्रश्न हमारे, उत्तर आपके

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक



प्रश्न:- कई बार दूसरे को मालूम नहीं होता कि वह दुख दे रहा है लेकिन हमें दुख फील हो रहा है तो हम उससे कैसे बच सकते हैं?

उत्तर:- जब हम ज्ञान मार्ग में आ जाते हैं तो एक स्लोगन बहुत अच्छे से समझ में आ जाता है – ‘ना दुख दो, ना दुख लो।’ पहले एक-दो को दुख देने की जो आदत थी, वो हम छोड़ते हैं। पहले हम गुस्सेवश, लोभवश किसी को दुख देते थे, वो अब नहीं करेंगे। मुझे बदलना है, मैं कभी किसी स्वभाववश, कारणवश किसी को दुख न दूँ। मैं यह पुण्य कर्म करूँ कि यदि पहले किसी को दुख दिया है तो उससे माफी माँग लूँ। माफी माँग लो ताकि वह महसूस करे कि कल जो यह था, वह अब नहीं है। अंदर से जिगरी मेरा परिवर्तन हो। अगर मैं दुख लेती हूँ तो मुझे देने का भी ख्याल आयेगा। इसलिए हम स्नेह से, क्षमा भाव से संबंधों को अच्छा रखें। स्नेह, क्षमाभाव, रहम – इन तीन बातों की कमी होती है तो दुख की महसूसता

आती है। अगर ये तीनों बातें होंगी तो हम दुखी होने के बजाय अपने में जो कमियाँ होंगी, उन्हें भरेंगे। मैं कभी नहीं कहती कि दुख देने वाला दोषी है, नहीं। मैं सोचती हूँ, मैं एक्यूरेट नहीं हूँ। हम दुखी होना छोड़ देंगे तो उनका दुख देना भी बंद हो जायेगा। यह परीक्षा है, मुझे इसमें पास होना है। दुखी होना माना फेल होना। वो मुझे भले ही ठुकराये लेकिन मुझे उसे अपना बनाना ही है। परमात्मा ने मुझे जो सिखाया है, मुझे वो करना है। ऐसे कर्म करते रहेंगे तो दुखी होना या दुख लेना इस धंधे से छूट जायेंगे। दुखहर्ता के बच्चे हैं, सुख देने वाले हैं। तो जैसे परमात्मा में गुण हैं, वे हममें आ जायेंगे।

प्रश्न:- आज की राजनीति और धर्म से हम कहाँ तक संबंध रखें?

उत्तर:- आज की दुनिया में धर्म और राजनीति दोनों में सच की रत्ती भी नहीं है। इसलिए लोगों को धर्म से वैराग्य आ गया है। क्या पता, नाम धर्म का

और कर्म पाप का हो जाये। राजनीति में भी पता नहीं पड़ता है, आज किसी का राज्य, कल किसी का राज्य। हमको अंदर से यह समझना है कि सत्धर्म किसे कहा जाता है, सत् राजनीति किसे कहा जाता है और अंदर से उसी मार्ग पर चलना है। धर्म और राज अगर झूठा है तो कोई बात नहीं, हम झूठे नहीं बनेंगे। धर्म कहता है, सत्यता को अपनाओ, राज्य कहता है, हर संबंध, कारोबार में आते पवित्रता, ईमानदारी और एक-दो में विश्वास रखो। निःस्वार्थ भाव रखो। झूठ से भरे इस संसार में रहते हुए भी हम निमित्त मात्र व्यवहार करेंगे, किसी के धोखे में फँस नहीं जायेंगे, ना किसी को धोखा देंगे, संभल कर रहेंगे, संबंध तोड़ेंगे नहीं, संभल कर चलेंगे ताकि हमारे साथ औरों का भी भला हो।

प्रश्न:- मोह समाप्त करके शुद्ध स्नेह में कैसे रहा जाये?

उत्तर:- जब आत्मा का ज्ञान हो जाता

है तो अपनी देह से ममता छूट जाती है और देह का जिनके साथ संबंध है, उनसे भी ममत्व छूट जाता है। डिटैच होने में न तो अकेलापन महसूस होता है और ना ही जीवन में सूखापन आता है। मोह तोड़ने पर यह हो जायेगा, वो हो जायेगा, अमुक आदमी मेरे बिना कैसे चलेगा या मैं उसके बिना कैसे चलूँगी – इस प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते हैं। इसका समाधान यह है कि परमात्मा से जो शुद्ध रूहानी प्रेम मिलता है उसको हम संबंधों में बाँटना शुरू कर दें, इससे मोह छूट जाता है और सच्चा प्यार शुरू हो जाता है। अंदर से समझ में आता है कि जितना भगवान का प्यार है, उसके आगे इंसान का प्यार क्या है! मनुष्य का प्यार तो धोखा देने वाला है, उसका मैं क्या करूँगी। मैं तो परमात्मा का प्यार खींचूँगी। हम ब्रह्माकुमारी बहनों की आपस में अटैचमेन्ट नहीं है पर स्नेह है। मोह दुख देता है। इससे हम अधीन बन जाते हैं। सच्चे रूहानी प्यार का व्यवहार बड़ा अच्छा होता है। मोह छोड़ने पर ही हम निराधार बनकर बाबा को याद कर सकेंगे। कई बार ऐसा होता है कि हमारा तो नहीं होता पर दूसरे का हमारे में मोह होता है। जब मैं ज्ञान में आई तो मुझे मोह छोड़ने में दिक्कत नहीं आई पर औरों का मेरे में बहुत मोह था, वह कैसे छूटे? उसके लिए थोड़ा अधिक

पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसके लिए पहले आत्म-स्वरूप में टिको, इससे खुद छूट जायेंगे। दूसरों का मेरे प्रति मोह तोड़ने के लिए मैंने जो गहरा पुरुषार्थ किया, वह बता देती हूँ। मैंने इतनी गहरी तपस्या की कि इनको मेरा शरीर क्यों दिखाई देता है, इनको संबंध क्यों याद आता है, इनको यह क्यों नहीं दिखाई पड़ता कि यह ईश्वर की संतान है। मैंने यह इतना ज़ोर से पुरुषार्थ किया कि लौकिक को यह भासना आने लगी कि यह ईश्वर की संतान है। जब से मैंने इस बात का ध्यान रखा है तब से मेरे शरीर से किसी की अटैचमेंट हो नहीं सकती। कोई भी मेरे से अशुद्ध संबंध रख नहीं सकता। जिनका मेरे में मोह था, उन्होंने सोचा, यह तो संन्यास कर रही है, किसी से कुछ माँगती नहीं है तो कहाँ से खायेगी, इसका क्या होगा? मैंने जवाब दिया कि कर्म करने के लिए मेरे पास कर्मन्द्रियाँ हैं, मैं कर्म कर सकती हूँ, अपने भाग्य का खा सकती हूँ। भगवान मुझे खिला रहा है, यह भी नशा होना चाहिए। मोह को छोड़ने के लिए पावरफुल योग चाहिए। इच्छाओं को समाप्त करने के लिए संतुष्टता का गुण चाहिए। परमात्मा मुझे दे रहा है, श्रेष्ठ कर्म से मुझे जो मिल रहा है, उसके अलावा मुझे कुछ और नहीं चाहिए।

प्रश्न:- यदि ज्ञान मार्ग में लौकिक

परिवार साथ न दे तो क्या करें?

उत्तर:- ज्ञान कहता है, तुम जो भी करो, समझकर करो। परिवार को अकेला छोड़ दो और हम अकेले हो जायें, यह ज्ञान नहीं कहता। यह भी नहीं होना चाहिए कि अपनी मर्यादायें और ज्ञान-ध्यान को छोड़कर वो जैसा कहें, वैसा हम करने लग जायें। धीरज, शांति व प्रेम से काम लेना है। ज्ञान-योग से शक्ति जमा करनी है, खर्च नहीं होनी चाहिए। वह शक्ति हमें ऐसा गुणवान और मीठा बनायेगी जो परिवार के सदस्यों के आगे मजबूर नहीं होने देगी। अनुभव कहता है कि कोई भले ज्ञान में न चले पर मुझे सहयोग दे, मजबूर न करे। ज्ञान से समझ मिलती है, योग से शक्ति मिलती है। घबराओ नहीं, डरो नहीं कि अगर हमने ऐसा किया तो यह गुस्सा करेगा, छोड़ देगा। अगर हमारे संकल्प इस प्रकार के डर के चलेंगे तो वह ज़रूर ऐसा करेगा। युक्तियुक्त, ज्ञानयुक्त, योगयुक्त रहने से हमारी विजय होगी, हार नहीं होगी। बाबा ने कहा है, प्रवृत्ति में रहो, यह बात तो याद रख ली लेकिन प्रवृत्ति में कैसे रहो, उसे भी याद रखना है। ऐसा रहना है जो हमारी भी प्रालब्ध बने, दूसरों की भी बने। वो भी बाबा के नजदीक आयें, हम ऐसा कोई भी काम न करें जो वे दूर हट जायें।



पुरुषोत्तम संगमयुग में नारी सशक्तिकरण का कार्य

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

इस संसार रूपी रथ के दो पहिये हैं, एक पुरुष तथा दूसरा नारी। दोनों पहियों पर, संसार को सुख, शान्ति और समृद्धि के साथ चलाने की ज़िम्मेवारी है। दोनों के अधिकार समान हैं परंतु जैसा कि एक लेखक ने लिखा है कि कभी-कभी दो पहियों में असमानता हो जाती है, एक ट्रेक्टर तथा दूसरा स्कूटर का पहिया हो जाता है। परिणामरूप संसार की गाड़ी ठीक रीति चल नहीं पाती, इसी कारण समय प्रति समय दोनों के बीच के भेद को मिटाने का प्रयत्न किया जाता है।

शिवबाबा ने तो हम बच्चों को श्रेष्ठ समाज की रचना के लिए यही लक्ष्य दिया है कि नर ऐसी करनी करे जो नर से श्रीनारायण बने और नारी ऐसी करनी करे जो नारी से श्रीलक्ष्मी बने। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य कारोबार में दोनों को समान अधिकार होने के कारण दोनों के बीच कोई भेद नहीं होता इसलिए सुख, शान्ति, पवित्रता रहती है परंतु समय जैसे-जैसे व्यतीत हुआ, सतयुग-त्रेतायुग के बाद द्वापर आया, तब से पुरुष प्रधान संस्कृति ने अपने हाथों में सब प्रकार की सत्तायें ले ली। साथ ही किसी-किसी धर्मस्थापक ने यह कानून भी बनाया कि एक पुरुष

चार स्त्रियों के साथ शादी कर सकता है। इस प्रकार से अनेक प्रकार की सामाजिक विडंबना निर्मित होती गई और नारी स्वयं को असहाय महसूस करने लगी। समान अधिकार की जगह पर एक मालिक, दूसरा गुलाम जैसी विचित्र बातें भी समाज में आने लगीं। नारी जीवन उपेक्षित एवं परावलंबी बन गया।

आज से करीब 1600 वर्ष पूर्व आदि शंकराचार्य ने 'संन्यास जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है', इस विषय पर उस समय के प्रसिद्ध गृहस्थी मंडन मिश्र और उनकी युगल भारती के साथ बहस की। काफी चर्चा के बाद उन्होंने सिद्ध किया कि संन्यास जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है, परिणामरूप मंडन मिश्र को घर-बार का त्याग कर संन्यासी बनना पड़ा। इस प्रकार नारी जीवन में समस्यायें खड़ी होती गईं।

भारत जब से आज़ाद हुआ है, तब से कानून के बल से नारी जीवन के उत्कर्ष का काफी प्रयत्न किया जाता रहा है उदाहरण के लिए बाल विवाह, दहेज, विधवा विवाह तथा पुत्री उत्तराधिकार आदि के बार में सरकार ने कानून बनाये।

नारी जीवन के सशक्तिकरण के लिए पिछले दो-तीन मास से एक

प्रयत्न हो रहा है और वह है, संसद में महिलाओं के आरक्षण के लिए जो कानून राज्यसभा में पारित हो गया, वह लोकसभा में भी पारित हो। लोकसभा में उसकी चर्चा थोड़े समय बाद होने वाली है जिसके द्वारा सरकार ने भारत की संसद और विधानसभाओं में 33% सीट महिलाओं के लिए आरक्षित करने का सोचा हुआ है।

वर्तमान समय भारत जैसे बीस अन्य देश हैं, जहाँ नारियों के लिए संसद में कोई आरक्षण नहीं है। वर्तमान समय भारत की संसद में 11% सीटों पर महिलायें हैं। श्रीलंका जैसे देश में संसद में 6% महिलायें ही चुनकर आ सकती हैं। पाकिस्तान में वर्तमान समय 22% सीटें महिलाओं ने जीती हुई हैं जबकि कानून में केवल 17.5% सीटें ही महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। नेपाल में संसद एवं विधानसभाओं के चुनाव में 50% सीटों के लिए महिलाओं का खड़ा होना अनिवार्य है और कम से कम 33% सीटों पर महिलायें चुनकर आनी चाहिए।

बांग्लादेश में संसद में 345 सीटें हैं जिनमें 45 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। वर्तमान समय वहाँ पर

65 महिलायें सांसद के रूप में काम कर रही हैं। चीन में महिलाओं के लिए आरक्षण का कोई कानून न होते हुए भी वहाँ पर 21% सीटों पर महिलायें चुनकर आई हुई हैं। रवांडी देश में 56% बहनें संसद में चुनकर आई हुई हैं। दक्षिण अफ्रीका में संसद में 45% सीटें, आइसलैण्ड में 43%, अर्जेन्टीना में 42%, नीदरलैण्ड में 41% तथा नार्वे में 40% सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। अर्जेन्टीना में ऐसा विचित्र कानून बना है कि वहाँ पर 42% सीटें महिला सांसदों के लिए आरक्षित हैं। अगर कोई राजनीतिक दल इतनी संख्या में महिला उम्मीदवारों के नाम घोषित नहीं करता तो उसे चुनाव लड़ने का अधिकार नहीं दिया जाता। इसी प्रकार का कानून बेल्जियम में भी है जहाँ 35% सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।

इस प्रकार से भौतिक दुनिया में तो लोग समझते हैं कि संसद के अंदर ज्यादा बहनें चुनकर आयेगी तो महिलाओं का उत्कर्ष होगा और नारी जीवन में सुख-शान्ति का अनुभव होगा। परंतु ऐसी कोई बात नहीं है। कारण, समाज में कई समस्यायें हैं जो केवल कानून के द्वारा हल नहीं हो सकतीं। इस संदर्भ में एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ। ओम शान्ति भवन में आयोजित सन्त सम्मेलन में अनेक संन्यासी, महात्माओं ने इस विश्व विद्यालय की

बहनों की आध्यात्मिक और सर्व प्रकार की उन्नति तथा सेवाओं की सराहना की। एक संन्यासी महानुभाव ने तो इतने तक कहा कि 'हिंदू समाज में पुरुष और नारी दोनों की संख्या बराबर होते भी पुरुषों को ही शास्त्र आदि पढ़ने और आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने की ज़िम्मेवारी दी गई है। आध्यात्मिक क्षेत्र में स्त्रियों की जितनी उन्नति होनी चाहिए, उतनी नहीं हो पाती है।' संन्यासी महोदय ने बताया कि जिस नारी जीवन की उपेक्षा हमारे धर्मनेताओं ने की, उसकी क्षतिपूर्ति हेतु शिव पिता परमात्मा ने ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना कर ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा बहनों द्वारा देने का जो अभियान चलाया, वह सराहनीय है क्योंकि हरेक बच्चे का पहला गुरु उसकी माँ ही होती है जो अच्छे संस्कारों का सिंचन करती है।

संन्यास धर्म में सर्वोच्च पद शंकराचार्य का है, उसके बाद 64 महामण्डलेश्वर, बाद में सभी महंत आदि आते हैं। पिछले 1500 वर्षों के संन्यास धर्म के इतिहास में कोई भी नारी शंकराचार्य या महामण्डलेश्वर पद की अधिकारी नहीं बनी लेकिन अब इन महानुभावों ने इस विश्व विद्यालय की बहनों के आध्यात्मिक प्रचार के कार्य को देखते हुए अपने कारोबार में परिवर्तन किया है और अब तीन संन्यासिनी बहनों को महामण्डलेश्वरी की उपाधि से

सम्मानित किया है। ऐसी एक महामण्डलेश्वरी बहन ने आबू में आकर विश्व विद्यालय के प्रति शुभभावनायें प्रदर्शित करते हुए कहा कि मैं जो आज महामण्डलेश्वरी बनी हूँ, यह सम्मान मुझे ब्रह्माकुमारीज के कारण ही मिला है।

सन् 1937 में, शिवबाबा ने जब प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देने का कार्य शुरू किया तब बहनों, माताओं, कन्याओं के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और ज्ञान प्रचार के निमित्त बनाया। वर्तमान समय अनेक प्रकार की सामाजिक क्रांति और परिवर्तन हो चुके हैं। विज्ञान ने अनेक प्रकार की अंधश्रद्धा तथा कर्मकांड को परिवर्तित किया है परंतु सन् 1937 में समाज के नियमों में अनेक प्रकार की जड़तायें थीं। ऐसी विषम परिस्थिति में शिवबाबा ने बहनों, माताओं के सिर पर ज्ञान का कलश और ज़िम्मेवारी का ताज रखकर जो आध्यात्मिक क्रांति की है, वो बहुत ही सराहनीय है। शिवबाबा के इस कार्य में पुरुष प्रधान समाज ने अनेक प्रकार की समस्यायें खड़ी कीं। उस समय अनेक प्रकार के सामाजिक और कानूनी प्रश्न विश्व विद्यालय के सामने आये। मिसाल के तौर पर, अपनी एक ब्रह्माकुमारी बहन, अपनी बच्ची तथा माँ-बाप से मिले गहने लेकर जब समर्पित हुई तब उनके पति ने केस किया कि भले वह घर-बार

छोड़कर ब्रह्माकुमारी बने परंतु उसके माता-पिता से प्राप्त गहने उसकी संपत्ति नहीं बल्कि पति की है। परंतु कोर्ट में फैसला हुआ कि स्त्री अपने माँ-बाप की तरफ से मिले स्त्रीधन की स्वतंत्र मालिक है, उस पर पति का कोई हक नहीं है। इस प्रकार से नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में शिवपिता परमात्मा द्वारा पहली-पहली कानूनी विजय हुई। पहली बार नारी के भौतिक और आध्यात्मिक सशक्तिकरण का कार्य हुआ।

उसके बाद दूसरे एक प्रसंग में पति ने केस किया कि स्त्री वासनापूर्ति का एक साधन है और हरेक पति को अपनी कामवासना की पूर्ति का पूर्ण अधिकार है जो शादी से प्राप्त होता है। परंतु कोर्ट में इसके बारे में यही निर्णय लिया गया कि स्त्री अपने शरीर की मालिक है, स्त्री सिर्फ काम विकार की पूर्ति का साधन नहीं, कोई गुड़िया नहीं है। अगर वह नहीं चाहे तो उसका पति उसके ऊपर किसी भी प्रकार की ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं कर सकता। बाद में भारत सरकार ने भी कानून में परिवर्तन किया। वर्तमान समय यह कानून है कि पत्नी की इच्छा के विरुद्ध उसका पति उससे शारीरिक संबंध स्थापित नहीं कर सकता और अगर पति कामवासना पूर्ति के लिए ज़ोर-ज़बर्दस्ती से संबंध बनाता है तो वह बलात्कार की व्याख्या में आ जायेगा और पति को सजा हो सकती है। ऐसे कानून दुनिया के कई देशों में आज भी

नहीं हैं। आज भी कई पढ़े-लिखे देशों में स्त्री, पति की वासनापूर्ति का साधन है परंतु भारत में शिव पिता परमात्मा के क्रांतिकारी कदम के परिणामरूप भारत की नारी कामपूर्ति की बातों में सुरक्षित है।

कई मातायें आध्यात्मिक उन्नति के लिए परिवार और बच्चों को छोड़कर जब विश्व विद्यालय में समर्पित हुईं तब पुरुषों ने केस किया कि परिवार की ज़िम्मेवारी छोड़कर पत्नी आध्यात्मिक उन्नति के लिए जा नहीं सकती। कराची के उच्च न्यायालय ने निर्णय लिया कि पुरुष अगर आध्यात्मिक उन्नति के लिए घर-बार, पत्नी और बच्चों का संन्यास कर जीवन सफल कर सकता है तो नारी क्यों नहीं। नारी को भी आध्यात्मिक उन्नति के लिए पति और बच्चों का त्याग करके श्रेष्ठ जीवन धारण करने का उतना ही अधिकार है। इस प्रकार पत्नी भी घर-बार का त्याग कर सकती है, यह बात भी कोर्ट द्वारा मानी गई।

उपरोक्त क्रांतिकारी कदमों के कारण आज सन् 2010 में महिलाओं की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति में कई सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। अब महिला आरक्षण द्वारा शिवबाबा के कार्य में जाने-अनजाने भारत की सरकार मददगार बन रही है और यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय बहनों, माताओं की आध्यात्मिक उन्नति का सर्वश्रेष्ठ

साधना केन्द्र है, इस बात को भी मानने लगी है।

वर्तमान समय ईश्वरीय विश्व विद्यालय के 8,500 से भी अधिक सेवाकेन्द्र, 130 से भी अधिक देशों में हैं। हमारी अनेक दादियों व बहनों के पुण्य पुरुषार्थ के फलस्वरूप यह विश्व विद्यालय आज जन-जन तक पहुँचा है और जो आध्यात्मिक क्रांति बहनों और माताओं द्वारा हो रही है, उसे भारत की प्रजा खास और दुनिया आम रूप में स्वीकार कर रही है। कई बार मैं मन में सोचता हूँ कि इस विश्व विद्यालय का जो विकास बहनों और माताओं ने किया है, अगर शिवबाबा ने पुरुषों द्वारा कारोबार कराया होता तो क्या इतना ही विकास होता और मैं मानता हूँ कि नहीं होता क्योंकि वर्तमान समय 35 लाख पुरुष संन्यासी हैं फिर भी समाज में जितनी नैतिक और सामाजिक उन्नति होनी चाहिए, वह नहीं है चाहे देश में चाहे विदेश में। शिवबाबा ने बहनों और माताओं द्वारा जो आध्यात्मिक क्रांति की ज्योति जलाई है उसकी चमक आज सारे विश्व में फैल रही है। परमात्मा पिता ने नारी जीवन के सशक्तिकरण के लिए जो दिव्य कर्तव्य किये, उनकी वास्तविक पहचान सबको मिले, इस संबंध में बहुत बड़ी किताब भी लिखी जा सकती है परंतु एक लेख की मर्यादा के कारण थोड़ी-सी बातें आपके सामने रखी हैं। ❖



‘पत्र’ संपादक के नाम

आज जब गहन, गंभीर और व्यापक धार्मिक सद्विचारों का अभाव बढ़ता जा रहा है, ज्ञानामृत उस खाई को पाटने की क्षमता रखती है। सद्विचारों के प्रचार-प्रसार के इस अभियान हेतु मेरी शुभकामनायें व बधाई!

— संतोष बी. गुप्ता,
सक्करसाथ, अमरावती

फरवरी अंक में संपादकीय लेख ‘एक कैद यह भी’ पढ़ा। लेख ‘घर और जेल में अंतर’, ‘शरीर, प्रकृति का उपहार है’, ‘स्व का तन्त्र या प्रकृति का तन्त्र’, ‘मुक्तेश्वर हैं परमात्मा’ आदि उप-शीर्षकों का वर्णन करने में सुन्दर तथा प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। पराधीनताओं से मुक्ति का उपाय लेखक ने अप्रतिम उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि जैसे बाढ़ या कीचड़ में फँसा व्यक्ति आगे-पीछे भागने का लाभ नहीं ले सकता क्योंकि चारों तरफ पानी ही पानी या कीचड़ ही कीचड़ है। ऐसे में हेलीकॉप्टर से व्यक्ति को उठा लिया जाता है जिसे एयर लिफ्टिंग कहते हैं। वर्तमान समय विकारों की दलदल से मुक्ति के लिए पिता परमात्मा की याद ही एयर लिफ्टिंग है।

— ब्र.कु.अमित लोडम, अकोला

फरवरी 2010 अंक में ‘भगवान को बनाइये हमराज’ लेख में हम माताओं की एक मुख्य समस्या का समाधान है और वह है, बच्चों को एक सुन्दर व लंबा बचपन देने के लिए उन्हें अपनी समस्यायें न सुनाकर आध्यात्मिकता को अपना सहयोगी बना लेना। परमपिता परमात्मा ने आप सब लेखक भाई-बहनों को निमित्त बनाया है हम सबका मार्गदर्शन करने के लिए। ढेर सारी शुभकामनायें!

— ब्र.कु.नीलम, फरीदाबाद

मार्च अंक पढ़ा। ‘आसक्ति और प्रभाव’ संपादकीय बहुत गहन व ठोस है। अंतःस्थल की भावनायें, बुद्धि का लगाव किस प्रकार लगा रहता है, उसे किस प्रकार छुड़ा लेना चाहिए आदि बातों को बहुत ही सूक्ष्मता से समझाया गया है। उच्च विचार, ईश्वरीय स्मृति, निश्चयबुद्धि आदि प्रभावों से मुक्त रखते हैं, यह शतप्रतिशत सत्य है।

— ब्र.कु.सुनीता, चिटगुप्पा

मार्च 2010 का संपादकीय लेख ‘आसक्ति और प्रभाव’ मेरे निजी जीवन में बहुत ही उपयोगी रहा, इससे पहले जीवन में कोई घटना घटती थी तो काफी समय तक उसका चिन्तन चलता रहता था लेकिन जो विधि बताई गई है, उसके प्रयोग से

फुलस्टॉप लगाने में मदद मिली है। अव्यक्त बापदादा आपको ऐसे और भी लेख लिखने की शक्ति दे। इसके साथ ही ‘आध्यात्मिकता की नज़र में हनुमान जी’ लेख भी भक्त आत्माओं की सेवा के लिए बहुत मददगार साबित हुआ है।

— ब्र.कु. कमलेश, गुजरात

मार्च 2010 अंक में ‘प्रश्न हमारे, उत्तर आपके’ स्तंभ में ‘रिइनकारनेशन थैरेपी’ एवं ‘कर्म सिद्धांत’ के बारे में दिये गये उत्तर सारगर्भित लगे। ‘लाल बत्ती वाला बाबू’ आलेख से मुरली के प्रभाव से परिचित हुए। ऐसे प्रेरणादायी संस्मरणों से सेवा कार्य में लगे बाबा के बच्चों को अतिरिक्त ऊर्जा मिलती है।

— अनीता, विजयनगर, जबलपुर

मार्च अंक में ‘पुरुषोत्तम संगमयुग में ईश्वरीय चुनाव की पद्धति’ लेख पढ़कर बहुत ही खुशी हुई। स्वपसंद, लोकपसंद और प्रभुपसंद के आधार पर परमात्मा द्वारा आत्मा के चुनाव की बात समझ में आई। ‘परिस्थिति-वरदान या अभिशाप’ लेख पढ़कर जाना कि परिस्थिति से आत्मा का बल बढ़ता है। परिस्थिति को वरदान ही मानना ठीक है। सही लिखा है कि परिस्थिति कुदरत की देन है जबकि विकार रावण की देन है। मैं प्रफुल्लित हुआ हूँ।

— कृष्णदास, वसई (वेस्ट), ठाणा

तुम मुझे विकार दो, मैं तुम्हें बादशाही दूंगा

• ब्रह्माकुमार अवनीश, रेनूकूट, सोनभद्र (उ.प्र.)

महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस ने परतंत्र भारतवासियों का आह्वान करते हुए कहा था, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।' आज़ादी की भेंट में यह शर्त यदि बहुत कठोर नहीं थी तो आसान भी नहीं थी क्योंकि खून देकर आज़ादी मिल सकती है मगर उस आज़ादी का लुप्त उठाने का अवसर शायद ही उन्हें मिला हो जिन्होंने अपना खून दिया। बहुत ही ज़्यादा मार-काट व संघर्षों के बाद आज़ादी तो मिली मगर केवल जिस्म और ज़मीन तक ही सीमित रही; रोग, शोक, दुख, अशान्ति और भ्रष्टाचार से हम आज़ाद न हो सके। अंग्रेज़ों की गुलामी उतनी हानिकारक नहीं थी जितनी कि सर्वत्र व्याप्त विकारों की गुलामी घातक सिद्ध हो रही है।

पाँच विकार हैं

कूड़े-करकट के समान

कहते हैं, परिस्थिति पुरुष को जन्म देती है। भारत की राजनैतिक आज़ादी के लिए सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी आदि महापुरुष प्रकट हुए और आज विकारों की गुलामी से छुड़ाने के लिए परम पुरुष अवतरित हो चुके हैं। सर्व आत्माओं के प्राणप्यारे परमपिता परमात्मा शिव ड्रामानुसार एक बार फिर से धरा पर पधार चुके हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार ले उन्होंने भी हम आत्माओं के समक्ष एक शर्त रखी है,

'तुम मुझे विकार दो, मैं तुम्हें बादशाही दूंगा।' इन चंद शब्दों को पढ़ने से ही बड़े रोमांच की अनुभूति हो रही है। लग रहा है कि जैसे कोई हमसे घर का कूड़ा-करकट लेकर हीरे-जवाहरात देने की बात कह रहा है। यह केवल कहने मात्र नहीं है बल्कि यथार्थ है। हमारे अंदर के पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) ही कूड़े-करकट के समान हैं जो हमें युगों-युगों से सताते आ रहे हैं। अब परमात्मा हमसे विकारों रूपी गंदगी की मांग कर रहे हैं और बदले में इक्कीस जन्मों की सुख-शान्ति से भरपूर अविनाशी बादशाही देने के लिए दूर देश से धराधाम पर आये हुए हैं। सर्वात्माओं को ज्ञात हो कि यह कल्याणकारी सौदा पाँच हजार वर्षों के कल्प में सिर्फ एक ही बार होता है। इस सौदे में हमें न अपना खून बहाना है, ना ही बंदूक चलानी है, सिर्फ शिव बाबा की श्रीमत के अनुसार खुद को ज्योतिबिन्दु अविनाशी आत्मा समझकर उन्हें प्यार से याद करना है और अन्य आत्माओं के भी कल्याण के निमित्त बनना है।

समय रहते सफल कर लो

ज़रा विचार करें, आधुनिक जगत में सिर्फ पाँच साल की कुर्सी के लिए नेतागण कितना ज़्यादा धन खर्च करते हैं, मेहनत करते हैं और कितने तो कुर्सी प्राप्ति हेतु अनुचित कर्म करने से भी नहीं चूकते। इतना सब कुछ करने

के बाद भी कुर्सी पाँच साल तक ही साथ रह पाती है, कई बार तो पाँच साल से पहले भी छूट जाती है। इसी प्रकार, लौकिक पढ़ाई के विद्यार्थी सिर्फ एक जन्म के विनाशी पद और नौकरी आदि के लिए कम से कम बीस वर्षों तक किताबों से जूझते रहते हैं तब जाकर नौकरी मिलती है, वो भी कब छिन जाए, कोई भरोसा नहीं। लेकिन सिर्फ शिव बाबा के सहज राजयोग में वो जादू है जो कम से कम पच्चीस सौ वर्षों के लिए हमें सतयुगी पवित्र दुनिया का बादशाह बना देता है। इसलिए स्वयं निराकार परमात्मा कहते हैं, 'मीठे बच्चो, अब यह पुरानी दुनिया अपनी अंतिम स्टेज पर है, यह गई कि गई। अब तुम्हारा कोई भी सांसारिक तन, मन, धन और संबंध काम नहीं आने वाला है इसलिए समय रहते सब कुछ सफल कर लो, मैं तुम्हें मुट्टी भर चावल के बदले स्वर्ग दूंगा। यह सौदा अपने हाथ से मत जाने दो।'

याद रहे, हर काम का एक समय होता है। वर्तमान संगमयुग भी इस ईश्वरीय सौदे के लिए एकमात्र उपयुक्त समय है। अधिक जानकारी के लिए निकटतम ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर आप अपना और औरों का भाग्य बनाने का पुण्य कमा सकते हैं क्योंकि भगवान इस समय खुद कह रहे हैं, 'तुम मुझे विकार दो, मैं तुम्हें बादशाही दूंगा।' ❖

दो शब्द अभिभावकों से

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

यदि किसी उद्योग में बनने वाला कोई उत्पाद उपयुक्त आकार में ना बने या टूट-फूट जाये तो देश को कोई ज्यादा नुकसान नहीं होता। मान लो, काँच उद्योग में काँच की हज़ारों बोटलें टूट गईं। नुकसान तो हुआ पर पुनर्निर्माण विधि द्वारा इस नुकसान को कम भी किया जा सकता है। परंतु एक उद्योग ऐसा है जहाँ के उत्पाद में आया थोड़ा-सा नुकस सारे समाज, देश और विश्व पर भारी पड़ता है।

जी हाँ, मेरा इशारा मानव निर्माण करने वाले हमारे परिवारों की ओर है। संसार का सबसे ज़रूरी, सबसे महान, सबसे पहले किए जाने योग्य काम है एक बालक को सुसंस्कारित बनाना। इसमें यदि समय लगता है तो लगा दीजिए, शक्ति लगती है तो लगा दीजिए और धन लगता तो नहीं है फिर भी यदि थोड़ा-बहुत लगाना पड़े तो वो भी लगा दीजिए।

धन कमाया, जीवन-मूल्य नहीं

भौतिकवादी सोच में बँधा व्यक्ति दिन-रात मेहनत करके, जैसे-तैसे धन कमाकर समाज में प्रतिष्ठा पाना चाहता है। परंतु जैसे चादर को एक तरफ से बहुत ज्यादा खींचो तो दूसरी तरफ से शरीर के अंग ठण्ड में अकड़ जाते हैं, इसी प्रकार धन-धन की धुन में धन की प्रतिष्ठा तो मिल गई पर

दूसरी तरफ से चादर उघड़ गई अर्थात् धन कमाने की अधिक व्यस्तता ने परिवार को जीवन-मूल्यों से वंचित कर दिया। अब जीवन-मूल्यों से वंचित संतान कुछ भी कर सकती है। धन से प्राप्त प्रतिष्ठा को अपनी चरित्रहीनता की बाढ़ में डुबो भी सकती है या उत्तराधिकार के लिए हंगामा खड़ा करके दुनिया को तमाशा दिखा सकती है या कमाने वाले पिता की आँखों में धूल झोंक कर धन का दुरुपयोग कर सकती है या उसे पाई-पाई का मोहताज भी बना सकती है या उससे नाता-रिश्ता तोड़कर वैरागी बनकर साधु-संन्यासी भी बन सकती है। इसलिए आजकल धन की चादर में लिपटे लोगों की आहें बहुत सुनाई देती हैं। कारण यही है, एक पलड़े पर इतना जोर डाला कि दूसरा पूरी तरह उखड़ गया।

किशोरों और युवाओं

पर मंडराता खतरा

एकाकी पलों में किशोर और युवा बच्चे ग़लत रास्तों पर कदम बढ़ा लेते हैं। कहीं गरीबी, कहीं बेरोज़गारी, कहीं अनाप-शनाप खर्च की लालसा, कहीं रीस और देखा-देखी भी उन्हें पथभ्रष्ट कर देती है। फिल्म और केबल टी.वी. की रंगीनियाँ तथा उन्मुक्तता सोते में भी उनका पीछा

करती है। ये आकर्षण उन्हें अपराध और आतंकवाद की ओर ढकेल देते हैं। संयुक्त परिवारों में बड़े-बूढ़ों की नज़रें बच्चों के क्रियाकलापों पर रहती थीं पर अब वे सबकी नज़रों से मुक्त हैं। बच्चा किताब के पन्नों में छिपाकर क्या पढ़ रहा है, अध्ययन कक्ष को कुण्डा लगाकर अंदर क्या कर रहा है, स्कूल या ट्यूशन जाने के बहाने कहाँ जा रहा है, तथा कथित व्यस्त माता-पिता को ख्याल ही नहीं रहता है। न तो हरेक नागरिक के लिए पुलिसवाला नियुक्त किया जा सकता है, न प्रत्येक छात्र के लिए एक शिक्षक। आवश्यक है कि परिवार ही सुसंस्कारों का कवच और नैतिक मूल्यों का गहना बच्चों को पहना दे।

कोठी के बदले कोठरी

एक बार जेल में आध्यात्मिक ज्ञान सुनाने जाना हुआ। एक संभ्रांत-सा दिखने वाला युवक कैदी अपनी व्यथा प्रकट लगने लगा – बहन, मैं सरकारी नौकरी में था, अच्छी पगार मिलती थी। एक दिन अपने घर के सामने बन रही कोठी पर मेरी नज़र पड़ी। पता चला यह तो मेरे एक सहपाठी की बन रही है। धीरे-धीरे उसका रंग-रोगन हुआ, लाइटें लगीं, कार खड़ी हुई। मेरे मन में आया, मेरा मकान भी ऐसा हो तो मज़ा आ जाए।

पगार इसकी इजाजत नहीं दे रही थी। मैंने पिताजी को कहा, आप अपनी चार एकड़ ज़मीन बेच दें तो मेरा भी सपना पूरा हो जाए। पिताजी ने मना किया, कहा, पूर्वजों की धरोहर है, थोड़ी बंटवाई भी आती है, नहीं बेचनी। मेरे मन में आक्रोश उठा। एक-दो बार और कहके देखा, नहीं माने तो क्रोध और बढ़ा। एक रात सोए पिता की गर्दन काट दी कि आराम से कोठी बनाऊंगा। मुझे पुलिस पकड़ के ले आई, कोठी तो न मिली, कोठरी ज़रूर मिल गई।

यह तो हुई बड़े बच्चे की बात, एक छोटे बच्चे की तरफ भी गौर फरमाइये – नौकरी पेशा माता-पिता का सात वर्ष का बच्चा स्कूल से निकलते ही आती-जाती बस के पहिए के नीचे अपना ज्योमेट्री बॉक्स रख देता है और आनन्दित होता है। माता-पिता व्यस्त हैं, उसकी आदत को मिटाने में समय और सोच नहीं लगाते हैं, 50 रुपये थमा देते हैं और बच्चा नया ज्योमेट्री बॉक्स खरीद लाता है। एक-दो दिन बाद पुनः वैसा करता है। माता दुखी तो होती है पर कुछ कर पाने में असमर्थ है। इस प्रकार बच्चा महीने में 100-150 रुपये के ज्योमेट्री बॉक्स नष्ट करता है। अब जब पहले दिन यह घटना घटी, माँ अपने बच्चे के हाथ पर बीस (कम या ज्यादा भी) रुपये रखती और किसी असहाय बुजुर्ग या बालक की

ज़रूरत की चीज़ बच्चे के हाथों से खरीदवाती और दान भी करवाती और उसे समझाती, 'लाडले बच्चे, जैसे नष्ट करने की चीज़ नहीं है, बेटा, भारत के कितने गरीब लोग हैं जिन्हें पैसों की ज़रूरत है। बेटा, इन पैसों से अपने को किसी की मदद करनी है, व्यर्थ नहीं गँवाने हैं। बेटा, ज्योमेट्री बॉक्स नष्ट करने में जो आनन्द मिलता है, उससे हजार गुणा आनन्द किसी की मदद करके मिलता है।' निश्चित ही ऐसी दयालु वाणी सुनकर बच्चा सुधर जाता, पैसा भी बच जाता और दुआयें भी मिल जाती।

धन का पलड़ा भारी है या सुसंस्कारों का

श्रेष्ठ संस्कारों के अभाव में, सब कुछ होते हुए भी हम बरबाद हो रहे हैं। यदि औसत निकाली जाए तो आज के समय में, किसी पिता की एक घंटे की कमाई दस रुपया, किसी की सौ रुपया और किसी की हजार भी होती होगी। गिने-चुने पिता इससे ज़्यादा कमाई करने वाले भी होंगे। मान लीजिए, एक पिता 14 घंटे काम करके 14 हजार रुपये कमाता है। निश्चित है कि उसके पास बच्चों को संस्कार देने के लिए समय नहीं बच पाता है। अब बिना संस्कार वाले बच्चे, उसके आँख बंद करते ही या कई बार तो आँख खुली होते भी, उत्तराधिकार के बँटवारे में झगड़ते हैं और पिता की कमाई का लाखों रुपया

मुकदमे में बहा देते हैं। इससे तो अच्छा था कि वह पिता दो घंटे कम काम कर लेता और दो हजार रुपये कम कमा लेता पर बच्चों को सुसंस्कारित तो बना देता। परिणाम यह होता कि सुसंस्कारित बच्चे उत्तराधिकार का बँटवारा शान्ति से करते, परस्पर स्नेही बनते, पिता का सम्मान करते, घर में शान्ति होती और समाज में पिता का तथा परिवार का मान भी होता। पिता की वृद्धावस्था भी खुशी में गुजरती। ज़्यादा समय पैसा कमाने में लगाकर, बच्चों को संस्कारों से वंचित रखकर उन्हें धन का ढेर सौंप देना ज़्यादा अच्छा है या पैसा कमाने के एक-दो घंटे कम करके, उन घंटों को बच्चों को सुसंस्कारित बनाने में लगाकर, बच्चों को थोड़ा-सा कम धन सौंपना ज़्यादा अच्छा – निर्णय अभिभावकों के हाथों में है।

एक छोटी-सी सीख पिता की तरफ से

हर पिता को यह मालूम होता है कि वह घड़ी निश्चित है जब उसकी अंतिम श्वास निकलेगी। उसे यह भी पता होता है कि संपत्ति का पुत्रों में बँटवारा होगा, तो क्या वह अपने दो बच्चों या चाहे अधिक भी हों या एक भी हो, में यह संस्कार नहीं डाल सकता कि वे संपत्ति के लिए झगड़ें नहीं। क्या वह बच्चों को इतना नहीं कह सकता, 'देखो बेटा, मैं सदा रहने

वाला नहीं हूँ, एक दिन संसार से जाऊँगा, मेरे पीछे यह सब धन तुम्हारा ही है। परंतु प्यारे बच्चो, एक नम्र निवेदन है, सब रखना, मेरे जीते-जी, मेरे सामने, मेरी सम्पत्ति के टुकड़े मत करना। बेटा, अपने पिता की इज़्जत का और अपनी शान्ति का ख्याल करना। आप सब एक ही परिवार रूपी थाली के हो। घी की दो बूँदें चाहे इधर ज़्यादा गिरें या उधर, थाली तो एक ही है। यदि दो-चार पैसे एक के पास कम, एक के पास ज़्यादा चले जाएँ तो धैर्य और सहनशीलता से काम लेना, मारा-मारी मत करना, दुनिया को तमाशा मत दिखाना।'

बड़ी बात नहीं, ज़रूरी बात

झगड़ा चाहे आपस में हो या माँ-बाप के साथ, निंदनीय है – यह बात बड़े होकर नहीं सीख सकेंगे। जब वे आपके घुटने पकड़कर बैठते हैं, तभी आपको यह सब कानों में डालना पड़ेगा। कइयों के मन में ख्याल चलता है कि छोटे-छोटे मासूम बच्चों को इतनी बड़ी-बड़ी बातें क्यों सिखाई जाएँ परन्तु ये बड़ी बातें नहीं हैं, सच्ची और ज़रूरी बातें हैं। जहाँ आज के बच्चे, बीस वर्ष की आयु में सीखी जाने वाली सभी बातों को आठ, दस, बारह वर्ष की आयु में सीख रहे हैं तो यह बात उन्हें क्यों ना सिखाई जाए?

पैसे देकर खरीद रहा है

बच्चा, बाप का समय

एक बार एक पिता बाहर से आए, दस वर्षीय बेटा दरवाज़े पर खड़ा था।

कई दिन बाद पिता-पुत्र की मुलाकात हो पाई थी। पूछा, पापा, आप एक घंटे में कितना कमाते हैं? पिता ने कहा, दो सौ रुपये। पुत्र ने कहा, पापा, मुझे पचास रुपये चाहिए। पिता को गुस्सा आया, बोले, कल तो मम्मी के साथ बाज़ार गये थे, ज़रूरतें पूरी कर आये थे, आज पैसा क्यों चाहिए, जाओ अपने कमरे में। बच्चा चुपचाप जाकर अपने कमरे में पढ़ने लगा। पिता को विचार चला, कभी ऐसे इसने पैसे माँगे नहीं, जानूँ तो सही क्या करेगा पैसों का। पुत्र के कमरे में गए, पचास रुपये का नोट आगे बढ़ा दिया, ये लो बेटा। बच्चे ने रुपये हाथ में लिये और तकिये के नीचे से और भी पैसे निकालने लगा। पिता फिर गुस्साए – अच्छा तो तुम पैसे जमा करते हो? बच्चा चुपचाप पैसे गिनता रहा और फिर दो सौ रुपये पापा की ओर बढ़ाकर बोला, पापा, ये लो दो सौ रुपये, मुझे आपका एक घण्टा चाहिए।

जो देते हैं वही पाते हैं

बच्चे को हमारा समय चाहिए और हम पैसे उसके सामने फेंककर बाहर उड़ जाते हैं। कालान्तर में इसी का फल मिलता है। हम बुजुर्ग हो जाते हैं, हमें अपने बच्चों से समय नहीं मिलता, वे भी हर महीने पैसे हमारे सामने फेंक देते हैं और स्वयं अगली पीढ़ी में खो जाते हैं।

धन कमाना एक पहलू है पर कमाये हुए को योग्य को सौंपना

दूसरा पहलू है। हमें एकांत में बैठकर आत्मावलोकन करना है कि हमारा किस पहलू पर ज़्यादा जोर है। यदि केवल धन कमाने पर ही जोर है तो यह निश्चित ही असंतोष और पीड़ा का मार्ग है। धन कमाना यदि सुन्दर भवन बनाने की तरह है तो योग्य रीति से उसका प्रबंध करना, भवन की नींव की तरह है। नींव बनाए बिना सुन्दर भवन किस काम का! इसलिए विद्वानों ने कहा है –

पूत सपूत तो क्यों धन संचय

पूत कपूत तो क्यों धन संचय

हर युग में माता-पिता बच्चों को वर्सा देते आये हैं परन्तु वर्तमान युग ऐसा महान युग है जिसमें पिताओं का पिता, परमपिता सर्व मनुष्यात्माओं को वर्सा दे रहे हैं। भगवान का वर्सा है ईश्वरीय ज्ञान, गुण और शक्तियाँ। ये गुण और शक्तियाँ ही सर्व भौतिक सुख, साधन, सुविधा प्राप्त करने के आधार हैं। यदि हरेक माता-पिता अपना थोड़ा समय निकालकर धरा पर अवतरित भगवान को पहचानने और वर्सा लेने में लगाए तो हर युग में अपने बच्चों को देने के लिए उनके पास भरपूर धन रहेगा। अपने साथ अपने बच्चों को भी यह वर्सा लेने में लगाएँ तो वे शैतान के वर्से (विकार, व्यसन, विकृति) से बच जायेंगे क्योंकि बुराई से हटाने का सहज तरीका है उन्हें अच्छाई की ओर प्रवृत्त करना। ❖

बाबा मिला तो सब कुछ मिला

जीवन दुख-सुख रूपी दो रंगों से मिलकर बना है। मेरे जीवन में भी बहुत दुख आये जिनके कारण मरने की भी योजना बनाई। बहुत उलझन में था – क्या करूँ, कैसे करूँ, भगवान से दुआ माँगते-माँगते थक गया था लेकिन कोई भी जवाब नहीं मिला। तब मैंने सोचा, भगवान नाम की कोई चीज़ नहीं है, वह तो एक निर्जीव मूर्ति है, ना बोल सकता है, ना कुछ कर सकता है। भगवान पर से विश्वास पूरा टूट गया। तब भी मन में एक आस्था थी कि कोई आकर मेरे जीवन का मार्गदर्शक अवश्य बनेगा।

उन दिनों हमारे गाँव में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से एक चित्र प्रदर्शनी (*Exhibition*) लगी थी। सफेद कपड़े पहने कुछ लड़कियाँ वहाँ बैठी थीं और कुछ लड़के, देखने वालों को प्रदर्शनी के चित्र समझा रहे थे। मैंने भी चित्र देखे और कुछ किताबें खरीद लीं। दूसरे दिन भी मैं वहाँ गया और चित्रों को अच्छी तरह से समझने का प्रयत्न किया। कुछ ज्ञान समझ में आया तो खुशी मिल गई। मैं जानना चाहता था कि इस विश्व विद्यालय का मुख्य उद्देश्य क्या है? इसके ज्ञान से क्या फायदा मिलेगा? मैंने ये सवाल एक भाई से पूछे, उसने मुझे स्थानीय केन्द्र पर बुलाया।

• ब्रह्माकुमार दिगंत, आसाम

केन्द्र में प्रवेश करते ही मेरा मन आनंद से प्रफुल्लित हो उठा। निमित्त शिक्षिका बहन से विश्व विद्यालय के बारे में विस्तार से जान लेने के बाद मैंने दृढ़ निश्चय किया कि मैं यह शिक्षा जरूर लूँगा। अगले दिन से ही मैं नियमित आने लगा। मैं इस सेन्टर का पहला विद्यार्थी हूँ।

मैंने शान्ति पाने के लिए जीसस क्राइस्ट का एक छह महीने का पाठ्यक्रम पूरा किया था, उसके बाद सर्टिफिकेट भी मिला था लेकिन शान्ति नहीं मिली, और ही अशांति बढ़ने लगी। समय भी गया और शान्ति भी नहीं मिली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आकर, सात दिन का पाठ्यक्रम पूरा कर जब रोज़ाना मुरली सुनने लगा तो महसूस हुआ कि मुरली कोई साधारण बात नहीं है, यह है बाबा के मुखारविन्द से निकली अमृतवाणी जो हमारे जीवन को हीरे जैसा बना देती है। हर दिन मुरली सुनने के बाद मुझे अपने हर सवाल का जवाब, हर समस्या का समाधान मिल गया। आज ऐसा लग रहा है कि मुरली बिना हम जी नहीं सकते। मुरली न सुनो तो सब कुछ होते हुए भी मन में अशांति आती है। जितना बाबा का ज्ञान मंथन करने लगे, उतनी ही जीवन में शान्ति बढ़ने लगी।

आज मुझे वह मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी। मेरे जीवन में अभी सुख ही सुख है। दुख की दुनिया में दुख को आने से रोका नहीं जा सकता परंतु बाबा की छत्रछाया में रहने के बाद यह महसूस हुआ कि हम उसे सहन कर सकते हैं। समस्या आती है, हम बाबा की मदद से उसे दूर कर देते हैं। पारिवारिक उलझनें आती हैं, हम बाबा की तरफ से निमित्त बहनों के साथ बातचीत कर उन्हें खत्म कर देते हैं।

बाबा के साथ रहते-रहते मन धीरे-धीरे ऐसा बन गया कि पाने, न पाने में कुछ भी फर्क नहीं लगता। पाने में जो हँसी आ जाती है, न पाने में भी हँसी आ जाती है। हम सोचते हैं कि जहाँ संतुष्टता है, वहाँ और कुछ नहीं चाहिए। आज मेरे घर-परिवार वाले सब सुखी हैं। सभी लोगों को शान्ति, प्रेम, आनन्द का आधार शिवबाबा मिल गया। प्रेम के आँसू बहाता हूँ क्योंकि बाबा बहुत प्यार करता है, इतना ख्याल रखता है। बाबा मिल गया, और कुछ नहीं चाहिए। आज मैं अपने आप से इतना संतुष्ट और खुश हूँ जितना अथाह धन-दौलत पाकर भी नहीं हो सकता। इसलिए जो अभी तक बाबा का ज्ञान लेने से इंकार कर रहे हैं, वे बहुत भूल कर रहे हैं। बाबा का ज्ञान लेने के बाद शांति के लिए किसी को तरसना नहीं पड़ता। बाबा का ज्ञान लेकर आप भी जीवन को हीरे जैसा बना लो।



गतांक से आगे ..

डिप्रेशन : जानकारी और समाधान

‘डिप्रेशन’ विषय पर, बहन कनुप्रिया द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन तथा ब्रह्माकुमार डॉ. गिरीश पटेल भाई।



प्रश्न:- सेल्फ काउन्सलिंग क्या है?

उत्तर:- जब हम पहचान लेते हैं कि कौन-सी बात हमें परेशान कर रही है या हमारे अवसाद का निमित्त कारण है तो हम अपने आपको समझाना शुरू कर देते हैं, जैसे कि हम दूसरों को समझाते हैं। सबसे पहली बात है अपने अंदर की विशेषताओं और शक्तियों को पहचानना। ज्यादातर क्या होता है कि हम परिस्थिति का सामना नहीं कर पाते। किसी ने कुछ कहा या कोई दुर्घटना घटी तो उसको सहन करने की शक्ति नहीं है। ठीक समय पर ठीक निर्णय करने की शक्ति नहीं है। जब लगता है, हमारे भीतर इनमें से कोई शक्ति नहीं है तो खालीपन का अहसास होने लगता है।

जब हम राजयोग का अभ्यास करना शुरू करते हैं तो ये सभी शक्तियाँ स्वाभाविक रूप से इमर्ज होना प्रारंभ हो जाती हैं, क्योंकि ये सभी शक्तियाँ हमारे अन्दर हैं। हमें इन्हें कहीं बाहर से प्राप्त नहीं करना है। सहनशक्ति है, सिर्फ कभी-कभी हम उसका प्रयोग नहीं करते हैं। जैसे-जैसे हम इसे प्रयोग करते जायेंगे तो यह और भी बढ़ती जायेगी। सबसे बड़ी बात है कि कोई भी परिस्थिति या व्यक्ति हमारे मन की स्थिति को कंट्रोल नहीं कर सकता।

मान लीजिए, मेरे साथ किसी ने कोई बात की और मैं परेशान हो गई और गम की स्थिति में चली गई क्योंकि उसने कुछ ऐसी बात कह दी जो मेरी अपने प्रति बनाई गई इमेज से मेल नहीं खाती है, इसलिए उसके बोल मुझे

तकलीफ देना शुरू कर देते हैं। इसमें सेल्फ काउन्सलिंग यह होगी कि अपनी मनोस्थिति का मास्टर मैं स्वयं हूँ। अगर मैंने अपनी अच्छी इमेज बनाई है तो सबसे बड़ी सेल्फ काउन्सलिंग यही है कि कोई दूसरा व्यक्ति मुझे नियंत्रित नहीं कर सकता।

दूसरा, अपने आपसे पूछो कि असलियत क्या है, जो मैंने अपने बारे में सोचा, वो या जो वह कह रहा है, वो। अगर वह सही है तो मैं उस अनुसार अपने आपको बदल लूँ। अगर वह सही नहीं है तो उसने जो कुछ कहा है, उसका कोई अर्थ नहीं है। इसमें ज्यादा मुश्किल यह आती है कि हम अपने मन में बार-बार यह दोहराते रहते हैं कि उसने मुझे ऐसा क्यों कहा? यही वास्तव में परेशानी का कारण है। इसमें कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता, हमें स्वयं ही स्वयं से बात करके इसे समाप्त करना होगा।

प्रश्न:- क्या डिप्रेशन में जाने वाला व्यक्ति इस प्रकार की सेल्फ काउन्सलिंग सचमुच कर सकता है?

उत्तर:- हाँ, कर सकता है क्योंकि सबसे ज्यादा हमें ही पता होता है कि कौन-सी बात हमें दर्द दे रही है। हमें यह याद रखना है कि कोई भी व्यक्ति हमारी आज्ञा के बिना हमें डिप्रेशन में ले जा ही नहीं सकता। शक्तियों में सबसे बड़ी शक्ति है साइलेंस की। हमें शांति अनुभव करना सीखना है। शांति की शक्ति से स्वाभाविक रूप से परखने की, सामना करने की, निर्णय करने की शक्तियाँ आयेंगी।

प्रश्न:- डिप्रेशन कितने प्रकार के हो सकते हैं और उनके कारण क्या-क्या हैं?

उत्तर:- एक है रिएक्टिव डिप्रेशन, यह किसी परिस्थिति के आने पर उसकी प्रतिक्रिया के स्वरूप होता है, जैसे व्यापार में घाटा हो गया, किसी का देहांत हो गया आदि-आदि। दूसरा है, इन्डोजीनस डिप्रेशन जो केमिकल के कारण होता है। कोई बाह्य परिस्थिति नहीं है, फिर भी व्यक्ति निराश महसूस करता है। तीसरा है साइकोटिक डिप्रेशन। यह बहुत खतरनाक होता है। इसमें व्यक्ति पागल जैसी हरकतें करने लगता है क्योंकि यह साइकोसिस है। साइकेट्री में भी दो प्रकार की बीमारियाँ होती हैं- न्यूरोसिस और साइकोसिस। न्यूरोसिस में व्यक्ति खुद महसूस करता है कि मुझे बीमारी है और डॉक्टर के पास जाता है लेकिन साइकोसिस में व्यक्ति स्वीकार ही नहीं करता है कि उसे कोई बीमारी है। वह कहेगा कि मैं ठीक हूँ, आपको बीमारी है। डॉक्टर को भी यही कहेगा कि मुझे कोई बीमारी नहीं है, इनको है, इनका इलाज करो। साइकोटिक डिप्रेशन साइकोसिस होने की वजह से खतरनाक है।

प्रश्न:- क्या इन तीनों प्रकार के डिप्रेशन में सेल्फ काउन्सलिंग या राजयोग द्वारा लाभ मिल सकता है?

उत्तर:- इनमें से पहले दो प्रकार के डिप्रेशन में सेल्फ काउन्सलिंग या राजयोग मदद कर सकता है लेकिन साइकोटिक डिप्रेशन में इस प्रकार की चीज़ें नुकसानदायक हो सकती हैं। हालांकि शोधकार्य सिद्ध कर रहे हैं कि साइकोटिक डिप्रेशन में भी सेल्फ काउन्सलिंग और राजयोग से लाभ होता है लेकिन कई बार बीमारी बढ़ भी सकती है। कई बार सिखाने वाले के प्रति ही यह भाव पैदा होने लगता है कि यह मुझे परेशान कर रहा है, मेरे पीछे लगा है। पागलपन की उस स्थिति में वह कह सकता है कि मैं कृष्ण हूँ, मैं ही भगवान हूँ। इसलिए ऐसे डिप्रेशन में मेडिटेशन ना सिखाएँ तो अच्छा है।

प्रश्न:- सेल्फ काउन्सलिंग या मेडिटेशन किस प्रकार

डिप्रेशन में मदद करता है?

उत्तर:- इससे एक तो यह होता है कि हम अपने आंतरिक लक्षणों को अच्छी तरह पहचान सकते हैं तो ज़रा भी डिप्रेशन शुरू होते ही हम पहचान जाएंगे और ज़रूरी कदम उठा लेंगे। नहीं तो आमतौर पर जब डिप्रेशन बहुत बढ़ जाता है तभी उसका पता चलता है।

प्रश्न:- हर पल मेडिटेशन की स्टेज में या सेल्फ काउन्सलिंग की स्टेज में रहना आज के समय में बड़ा मुश्किल लगता है तो कैसे हर पल हम अपने आपको समझा सकते हैं?

उत्तर:- हर पल समझाने की आवश्यकता नहीं पर थोड़ा से अटेंशन रखने की ज़रूरत है। जैसे आजकल टेंशन में रहना, परेशान रहना बहुत स्वाभाविक हो गया है, वैसे ही खुश रहना भी सरल हो जायेगा। जब आप परेशान होते हैं तो सेल्फ काउन्सलिंग करके स्वयं से बात करके उस परेशानी को निकालते हैं। दो-चार बार इस प्रकार करते रहने से यह प्रक्रिया नेचुरल हो जायेगी, आपको अपने से ज़्यादा समय तक बातें नहीं करनी पड़ेंगी। धीरे-धीरे यह समय घटता जायेगा। मान लो, पहले आपको चार घण्टा पुरुषार्थ करना पड़ता था, फिर यह अवधि कम होती जायेगी। ऐसा समय भी आयेगा कि परेशानी आई, आपने स्वयं से बात की और स्वयं को ठीक कर लिया। धीरे-धीरे तनाव प्रभाव डालना बंद कर देगा। मेडिटेशन का अभ्यास आप चलते-फिरते भी कर सकते हैं। विशेष बैठने की आवश्यकता नहीं है। बात करते हुए भी हम इस सजगता में रह सकते हैं कि मैं एक शांत स्वरूप आत्मा हूँ। यात्रा करते समय, कार्यालय में कार्य करते समय भी मेडिटेशन में रह सकते हैं। ❖

जीवन में हम जो चाहते हैं, आवश्यक नहीं कि वह सब कुछ हमें मिल ही जाये, इसलिये अच्छा यही है कि जो मिलता है, उसे ही हम चाहने लग जायें

नशा : एक सामाजिक अभिशाप

• बहादुरसिंह गुर्जर, बयाना (राज.)

मद्यपान, पाप और अनाचार का जनक है, दुनिया में जितने भी जघन्य कृत्य होते हैं, उनमें कहीं-न-कहीं मद्यपान की सहभागिता अवश्य होती है। यह मानव को मानवता से नीचे गिराकर हैवान बना देता है। शराब पीने वाला प्रायः मांसाहारी भी होता है जिससे उसमें तामसिक वृत्तियाँ भी अधिक होती हैं, ऐसे में उससे नैतिकता की आशा करना आकाश कुसुम सदृश ही है। कहा गया है –

मद्यपस्य कुतः सत्यं

दया मांसाशिनः कुतः।

कामिनश्च कुतो विद्या

निर्धनस्य कुतः सुखम्॥

भावार्थ है कि मद्यपायी को सत्य से क्या प्रयोजन, मांसाहारी को दया कहाँ, कामी को विद्या कहाँ और निर्धन को सुख कहाँ।

भारतवर्ष में लगभग 35 करोड़ व्यक्ति विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों की गिरफ्त में हैं तथा 5,500 बच्चे प्रतिदिन नशा करना सीख जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 1,000 करोड़ रुपये नशीले पदार्थों पर खर्च कर दिये जाते हैं। नशीले पदार्थों में शराब तो परिवारों को तोड़ने एवं समाज को नष्ट-भ्रष्ट करने में प्रथम स्थान पर है ही, इसके अलावा गुटखे ने भी

लगभग 20 वर्षों में ही अपनी सर्वव्यापकता सिद्ध कर दी है।

एक तरफ सरकार का मानना है कि शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों से राजस्व में वृद्धि होती है परंतु शराब से जहाँ प्रतिवर्ष 60 हजार करोड़ की आय होती है, वहीं 150 हजार करोड़ रुपये शराबजनित रोगों पर खर्च करने पड़ते हैं। करोड़ों बच्चे अनाथ होते हैं। करोड़ों दंपती तलाक को मजबूर होते हैं। कितनी ही दुर्घटनाएँ प्रतिदिन शराब सेवन से हो रही हैं। शराब पीने वाले की शारीरिक एवं मानसिक दशा का वर्णन करते हुए एक संस्कृत सुक्ति में कहा गया है –

वैकल्यं धरणीपातमयथोचितजल्पनम्।

सन्निपातस्य चिह्नानि मद्यं सर्वाणि दर्शयेत्॥

अर्थात् शराब पीने वाले में विकलता, पृथ्वी पर गिर पड़ना, अनुचित प्रलाप आदि सन्निपात के सभी लक्षण दिखाई देते हैं।

जानकार सूत्रों के मुताबिक जयपुर शहर के 90 प्रतिशत लोग अपनी आय का 20 प्रतिशत गुटखे पर खर्च करते हैं। एक तरफ जहाँ राजस्थान सरकार को 25 करोड़ रुपये मात्र की वार्षिक आय गुटखे से होती है, उधर लगभग 1,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष भूले-भटके भाई गुटखे

पर खर्च कर देते हैं। भारत सरकार को तंबाकू उत्पादों से 600 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष आय होती है तथा भारत सरकार को प्रतिवर्ष 2,400 करोड़ रुपये तंबाकूजनित रोगों पर खर्च करने पड़ते हैं। विडंबना देखिये, 80% कानून बनाने वाले, 90% कानून के रखवाले, 90% चालक-परिचालक, 67% अधिकारी वर्ग तथा 40% अध्यापक विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के आदी हैं।

एक लोकसेवी अपने पूरे जीवन में 1,000 व्यक्तियों, जो मद्यसेवन के विशेष अभ्यस्त हो चुके हैं, का संभवतः मद्यसेवन न छोड़ा पाये किंतु वह चाहे तो 1,000 छोटे बच्चों के मन में नशे के खिलाफ घृणा के बीज एक ही दिन में बो सकता है। अतः विद्यालयों में जाकर छोटे-छोटे बच्चों के बीच प्रार्थना-स्थल पर कहानी, दृष्टान्त एवं पोस्टर-प्रदर्शनी के माध्यम से नशे के खिलाफ कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहिये। हम बीमार होकर दवा लें, इससे अच्छा है कि हम बीमार पड़ने से पहले परहेज कर लें, जिससे बीमार ही न पड़ें। रेल, बस एवं सार्वजनिक स्थानों पर नशा करने वालों से थोड़ा कड़े शब्दों में धूम्रपान आदि का विरोध करना हो तो अवश्य ही करना चाहिये क्योंकि भारतवर्ष में

200 व्यक्ति धूम्रपान करने वालों के पास बैठने से प्रतिदिन मरते हैं। धूम्रपान करने वाले 84 प्रतिशत धुआँ दूसरों के पीने के लिए फेंकते रहते हैं।

यहाँ कुछ विचारणीय बिन्दु प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो मद्यसेवन को रोकने में सफल हो सकते हैं –

1. जो किशोरावस्था में दुर्गुणों से बचा रहता है, वही महान होता है, बुढ़ापे में तो भेड़िया भी संत जैसा बन जाता है।
2. जो दुर्व्यसनों का शौक पालते हैं, उन्हें बाद में शोक मनाना पड़ता है।
3. कौआ और कुत्ता सर्वाहारी हैं लेकिन नशीले पदार्थों का सेवन वे भी नहीं करते।
4. नशा करने वालों का नशा छुड़ाना कठिन है, असंभव नहीं किंतु जिन्होंने अभी नशा करना ही नहीं सीखा है, उनके मन में नशे के खिलाफ घृणा के बीज बोना आसान कार्य है।
5. संसार की सारी सेनायें मिलकर इतने मानवों और इतनी संपत्ति को नष्ट नहीं करतीं, जितनी शराब पीने की आदत।
6. नशीले पदार्थों के सेवन से जितना नुकसान होता है, उसकी उतनी जानकारी लोगों को नहीं होती। यदि उसके नुकसान की सही जानकारी हो जाये तो सेवन करना तो दूर, उसे स्पर्श भी नहीं करेंगे।
7. असली दोस्त गणितज्ञ होना चाहिये जो खुशियों में गुणा कर दे, दुखों में भाग दे, भूलों को घटा दे और

सुनहरे सपनों अर्थात् सदगुणों को जोड़ दे। शराब पीने में साथ देने वाले मित्र तो वस्तुतः शत्रु का व्यवहार कर रहे हैं।

8. जब आदमी के बनाये मंदिर में सुगंधित अगरबत्ती का धुआँ फैलाया जाता है तो भगवान के बनाये मंदिर (मानव-शरीर) में नशीले पदार्थों का धुआँ क्यों उड़ाया जाता है?

9. अगर अध्यापक (बुद्धिजीवी, लोकसेवी) नशीले पदार्थों का सेवन करता है तो इस अकेले दुर्गुण से उसके सैकड़ों सदगुणों पर पानी फिर जाता है।

10. नशा नहीं करने वालों में से 5 प्रतिशत भी यदि संगठित हो जायें तो समाज से दुर्व्यसन द्रुतगति से मिटाये जा सकते हैं।

11. व्यसन पहले नौकर बनकर आते हैं, कुछ दिन बाद मित्र बन जाते हैं, बाद में मालिक बन हुक्म चलाते हैं।

12. पहले नशीले पदार्थों का सेवन हम करते हैं, बाद में नशीले पदार्थ हमारा सेवन करते हैं।

13. सबसे पहले सभी प्रकार के नशीले पदार्थ मुफ्त में ही खिलाये-पिलाये जाते हैं। अतः मुफ्त के माल से सावधान रहना चाहिये।

14. छूत के रोगी की तरह, धूम्रपान करने वाले से दूर रहना चाहिये।

15. आत्महत्या करने का प्रयास (नशीले पदार्थों का सेवन करना भी) धारा 309 के तहत अपराध है।

16. शादी-कार्डों पर भी 'नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों को निमंत्रण नहीं' अथवा कार्यक्रम-स्थल पर 'नशा कराने और करने देने की स्वीकृति नहीं है' – ऐसा नोट लगाना चाहिये।

नशा छोड़ने के लिए कुछ उपाय एवं सुझाव पेश हैं –

1. दृढ़ संकल्प के आधार पर बिना किसी औषधि के भी किसी भी प्रकार का नशा छोड़ा जा सकता है।
2. सत्साहित्य पढ़ना चाहिये क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है।
3. भोजन के बाद दोपहर में दो गिलास छाछ पीयें, यदि गाय की छाछ हो तो सर्वोत्तम है। इससे शराब पीना भी छूट जाता है।
4. धूम्रपान की तलब आने पर दो बूंद लौंग का तेल जीभ पर टपकाना चाहिये।
5. पंचायतों के माध्यम से शराब एवं अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन पर जुर्माना तय करके रोक लगाने का प्रयास करना चाहिये।

(राजयोग का अभ्यास करने वाले हजारों भाई-बहनों ने नशों से ऐसा मुक्त मोड़ा है मानो वे कभी करते ही नहीं थे। राजयोग का अर्थ है आत्मा का परमात्मा से सीधा संवाद। यह सरल पर उत्कृष्ट प्रक्रिया है, कोई भी कर सकता है। नजदीक के ब्रह्मा कुमारीज केन्द्र पर निःशुल्क राजयोगशिक्षा प्राप्त कर सकते हैं – सम्पादक)

दुआओं का बल

वचन में मैं अक्सर हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाता था। ख्यालों में खोये रहने की प्रवृत्ति थी। ज्यादा नकारात्मक सोच के कारण एक बार कष्ट में आकर ज़हर खा लिया। बच तो गया पर माता-पिता के दुख को देख शर्मिन्दा भी हुआ। फिर उनकी खुशी के लिए जीवित रहने का मन बनाया, इलाज भी कराया और मन बहलाने के लिए दोस्तों के साथ खेलना, गपशप करना, घूमना, अशुद्ध खान-पान करना तथा लोफरगिरी करने लगा। इन सब बातों में चैन मिलने का भ्रम होता था पर चैन मिलता नहीं था। सन् 2000 में मुझे अपने एक संबंधी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का थोड़ा परिचय मिला। उसने बताया कि रावण कोई राक्षस नहीं बल्कि आत्मा में निहित मनोविकार ही रावण हैं। यह बात मुझे अच्छी तरह समझ में आ गई क्योंकि मन को खुश रखने के बुरे तरीकों से मैं बहुत तंग आ चुका था। उनसे प्राप्त अल्पकाल के मज़े के बदले और ही मानसिक कमजोरी व अकेले होते ही फिर भय व अशांति का अनुभव होता था। ईमानदारी से कहता हूँ, कई वर्षों तक चैन की नींद भी नहीं सो सका था तो लगा कि बात सच है, मेरे कष्ट का कारण कोई बाह्य रावण नहीं बल्कि अंतरात्मा में

• ब्रह्माकुमार विपिन, टीकमगढ़

निहित रावण ही है। उन संबंधी के सामने मैं उनका बहुत मज़ाक बनाता था। फिर भी कहीं सेन्टर का झण्डा या बहनों को देखता तो मन ही मन सोचता, हे भगवन्, बस आ रहा हूँ। इतने वर्षों तक भगवान से भी बहुत याचना की थी, कहीं सुनसान में पेड़ के नीचे भी कोई पत्थर मिल जाता था तो कई भगवानों (देवताओं) के नाम लेकर उनसे शांति की याचना में गिड़गिड़ाता था।

ज़हर की शीशी

साथ लेकर आश्रम गया

सन् 2002, जनवरी मास में मैं पहली बार आश्रम पर गया पर उसके पहले एक ज़हर की शीशी अपने पास रख ली थी कि यदि इस ज्ञान के द्वारा भी शान्ति न मिली तो मर ही जाऊँगा फिर चाहे जो भी हो। फिर वहाँ मेरा कोर्स हुआ तो सहज सब विश्वास हो गया क्योंकि मान तो पहले ही चुका था। तुरंत ही शुद्ध खान-पान व बुद्धि में शुद्ध विचारों की धारणा शुरू की, मुरली सुनने लगा पर जन्म-जन्म की तमोगुणी बुद्धि में ज्ञान सहज नहीं बैठा। कई बातों में मन उलझ जाता था। फिर भी शुद्ध संग, पवित्रता की धारणा व प्रभु-कृपा के चलते मन में इतना विश्वास पैदा हुआ कि मैं ठीक हो जाऊँगा। छह महीने बाद वह ज़हर

की शीशी फेंक दी और ज्ञान में चलता रहा।

दवा से ज्यादा

दुआओं का असर

फरवरी 2004, शिवरात्रि पर पहली बार माउंट आबू बापदादा से मिलने आया। इसके पहले लौकिक माँ ने भी छह महीने से क्लास करनी शुरू कर दी थी। जब मधुबन आया तो बाबा से मिलकर व यज्ञ-सेवा से बहुत बल मिला। ग्लोबल हॉस्पिटल में डॉ. निखिल चोपड़ा द्वारा मेरा इलाज शुरू हुआ और आराम भी मिलना शुरू हुआ। कुछ समय बाद पांडव भवन स्थित होम्योपैथी क्लिनिक में सेवाधारी डॉ. विनय मिश्र द्वारा मेरा इलाज चला जिससे मेरी हालत और अच्छी होती गई व मार्च 2007 से दवा पूर्णतः बंद हो गई। पर इलाज में दवा से कहीं ज्यादा मदद दुआओं की मिली, यह निश्चय से कह सकता हूँ क्योंकि दवा तो पहले भी ली थी, पर बेअसर थी। दुआयें कैसे मिलीं, यह अनुभव स्नेही पाठकों को बताना चाहूँगा। जब ज्ञान बुद्धि में बैठता नहीं था, योग लगता नहीं था, अमृतवले उठ नहीं सकता था, अपेक्षा अनुसार राहत भी कम थी तब भी इस बात पर निश्चय था कि कमी व ग़लती मेरी है। शिव बाबा में व ज्ञान में कोई ग़लती व कमी नहीं है। विपरीत परिस्थितियों में भी बाबा में निश्चय नहीं खोया व लौकिक समस्याओं के लिए बाबा से कभी मतलब की प्रार्थना नहीं की।

झाड़ू-पोंछे की सेवा करना, बहनों व बड़ों की बात ज़रूर मानना, समझ में न भी आये तो भी उनकी शुभ भावना महसूस करना व बाबा की आज्ञानुसार उनकी शिक्षा मानना, कभी भी उनकी किसी बात का बुरा न मानना, ज्ञान सुनाने का अवसर मिला तो दिल से यह भावना रखी कि कैसे भी इस आत्मा को भगवान की पहचान मिल जाये – इन सब धारणाओं, बाबा की छत्रछाया व जिनकी सेवा की उनके आशीर्वाद से न जाने कैसे ठीक होता गया।

अशान्ति की जेल से

निकल शान्तिदाता बना

धीरे-धीरे लौकिक परिवार से, कुटुंब नातेदारों से व मोहल्ले से भी कई आत्मायें ज्ञान में आती गईं। आज सेवाकेन्द्र में लगभग आधी संख्या लौकिक कुटुंब व मोहल्ले से है। इस बात का अभिमान नहीं पर बहुत खुशी है। गत एक वर्ष से नगर जेल में जाकर बंदियों को बाबा का ज्ञान सुनाने की सेवा का अवसर मिला। निमित्त बहन जी के दिशानिर्देश अनुसार सेवा करने से वहाँ भी अच्छी सफलता हुई और कई कैदी नियमित ईश्वरीय विद्यार्थी बने हैं। कमाल है ना, जो खुद अशांति की जेल में बंद था, आज जेल में बंद आत्माओं को शान्तिदाता पिता का ज्ञान सुनाने के निमित्त बना है। इससे बड़ा प्रभु-कृपा का प्रमाण और क्या होगा? अब यह जीवन शिव बाबा की शरण में ही है। यह आत्मा वास्तव में आज भी किसी काम की नहीं, काम व कमाल उन जादूगर का है जो मिट्टी को हीरा बना देते हैं। अब यह कुमार जीवन सच्चे अर्थों में संसार को ईश्वरीय ज्ञान व पवित्रता का संदेश देने में व स्वयं को पुण्यात्मा बनाने में सफल हो, यही हार्दिक शुभकामना है। लाख-लाख शुक्रिया है प्यार के सागर शिव बाबा का व संसार के सबसे मीठे व अनमोल रूहानी परिवार का। ❖



यह भी बदल जायेगा

ब्रह्माकुमार महेश्वर, पारलाखमण्डी



एक राजा के लिए एक स्वर्णकार ने डिब्बीनुमा अंगूठी बनाई जिस पर लिखा था, 'यह भी बदल जायेगा।' राजा उसे खोलकर पढ़ता था और फिर वह बहुमूल्य बात डिब्बी में बंद हो जाती थी।

एक बार, पड़ोसी राजा ने इस राज्य पर चढ़ाई कर दी। पराजय के कारण, राजा को युद्ध छोड़कर, जान बचाने के लिए भागना पड़ा। शत्रु के कुछ सैनिक अब भी उसका पीछा कर रहे थे। हताश, निराश और चिन्तित राजा ने एक पहाड़ की ओट में अपने को छिपा लिया, तभी उन्हें अपनी अंगूठी याद आई, उसे खोला, लिखा था, 'यह भी बदल जायेगा।'

पढ़कर, निराशा की उस अवस्था में भी राजा को आशा की एक किरण दिखाई दी। मन ही मन सोचा, यह संकट भी टल ही जायेगा। मनुष्य को आशा का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इसी बीच शत्रु सैनिक आगे निकल गये। थोड़े समय बाद राजा ने अपनी बिखरी हुई सैन्य शक्ति पुनर्गठित की और खोया राज्य हासिल कर लिया।

बड़ी धूमधाम के साथ जब वह अपने राजमहल में प्रवेश कर रहा था तभी अचानक पुनः उसकी नजर अंगूठी पर पड़ी – 'यह भी बदल जायेगा' पढ़कर राजा के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान फैल गई। अब उसकी मनोदशा आशा और निराशा से भी ऊपर थी। उसे जीवन का वह रहस्य कि 'सदा आनन्दित कैसे रहा जाये' समझ आ गया था।

प्यारे बाबा ने भी हम बच्चों को बेहद ड्रामा का ज्ञान दिया है। इस में भी प्रतिपल परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, सुखद भी आती हैं तो दुखद भी। दुखद परिस्थितियों को हम रोक नहीं सकते परंतु वे स्वयं बदल जायेंगी। चिन्तित और निराश होने की कोई बात ही नहीं है। ❖

परिस्थिति – वरदान या अभिशाप

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

परिस्थितियों में रहते हुए भी यदि सफलता प्राप्त करनी है तो कुछ बुनियादी बातों की समझ ज़रूरी है जो निम्न प्रकार से हैं –

(1) कलियुग में प्रत्येक जीवित मनुष्य को परिस्थितियाँ आती रहती हैं, कोई भी इनसे अछूता नहीं है। जीवित अर्थात् जो सामाजिक लेन-देन, तौर-तरीकों व सुख-दुख का हिस्सा हो, जिसके पास भविष्य के सपने हों। स्वयं परमात्मा भी जब कलियुग को सतयुग में परिवर्तन करने आते हैं तो उन्हें या उनके साकार माध्यम 'ब्रह्मा' को भी परिस्थितियों से 'दो-चार' होना पड़ता है।

(2) प्रत्येक परिस्थिति की एक समय-सीमा होती है। यह सीमा समाप्त फिर सुख का अनुभव कराती है। कहते हैं, 'अन्त भला तो सब भला', फिर तो परिस्थिति हमारा सब या संपूर्ण भला करने को ही आती है। हाँ, कई बार भला या तो भूतकाल के विकर्म के हिसाब बराबर होने के रूप में होता है या भविष्य में लाभ दिलाने वाला होता है। अतः उस भले के स्वरूप का ज्ञान न होना परिस्थिति को अभिशाप बना देता है।

(3) एक मनुष्य की परिस्थिति, दूसरे मनुष्य का फायदा होती है। एक मरीज़

की परिस्थिति, डॉक्टर व मेडिकल स्टोर को फायदा पहुँचाती है। दो मनुष्यों की मुकदमेबाज़ी, वकीलों व जजों की आमदनी का ज़रिया है। चोरी, डकैती, लूटमार की परिस्थिति, पुलिस कर्मचारियों को रोज़ी-रोटी दिलाती है। (पाठक स्वयं जाँच करें कि उनके जीवन के कौन-कौन से फायदे, दूसरे मनुष्यों की परिस्थिति से प्राप्त होते हैं।)

(4) प्रत्येक परिस्थिति की तीव्रता, उसके प्रति लिये गये नज़रिये, दृष्टिकोण या मनोवृत्ति पर निर्भर करती है। एक ही प्रकार की परिस्थिति, एक के लिए हादसा है, दूसरे के लिए जटिल समस्या है, तीसरे के लिए एक छोटी-सी रुकावट है और चौथे के लिए कुछ भी नहीं है अर्थात् परिस्थिति एक ब्लैक चैक है जिसमें नुकसान होने वाली रकम को भरने का काम, खुद मनुष्य अपने हाथों से करता है। समझदार मनुष्य एक रुपये की टोकन मनी भर कर परिस्थिति को वैसे ही टरका देता है जैसे चंदा माँगने वाले को टरकाता है।

(5) परिस्थिति का उपचार दूसरों पर भी प्रभाव डाल सकता है। भारी आर्थिक नुकसान को चुपचाप भी झेला जा सकता है और परिवार में

कलह करके भी। लगातार तीसरी लड़की के जन्म होने पर पत्नी व उस लड़की पर ताने मार-मार कर जीवन में ज़हर भी घोला जा सकता है या उस लड़की को लड़के की तरह समझ कर जीवन में खुशियाँ बिखेरी जा सकती हैं। पुत्र के फेल हो जाने पर, उसे मानसिक तौर पर प्रताड़ित भी किया जा सकता है तो उसमें आत्मविश्वास भरकर अगली बार के लिए प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। बिजली की समस्या पर, जेनरेटर सेट लगाकर मोहल्ले वालों को शोर से परेशान भी किया जा सकता है तो एक बढिया साइलेन्सर लगाकर उन्हें राहत भी पहुँचाई जा सकती है। अपनी परिस्थिति का समाधान दूसरे के लिए परिस्थिति पैदा करके कभी नहीं करना चाहिये अन्यथा भविष्य में कर्म-फल के रूप में परिस्थिति की सौगात अवश्य आयेगी।

(6) किसी परिस्थिति से या तो बचा जा सकता है या उसका मुकाबला किया जा सकता है और यदि दोनों ही संभव न हों तो उसका प्रबन्धन किया जा सकता है। जैसे कि यदि सामने से मरखना सांड आ रहा हो तो या तो उससे बचकर निकला जाये या उसे डण्डा दिखाकर, भगाकर निकला

जाये या फिर वापस किसी दूसरे रास्ते से जाया जाये। क्या करना उचित है, यह परखने की शक्ति से निर्धारित होता है। परखने की शक्ति अष्ट शक्तियों का हिस्सा है और शक्ति स्वयं में आत्मा का एक मौलिक गुण है। एक मौला (परमात्मा) ही, कलियुग में सुषुप्त पड़े मौलिक गुण को जागृत करने की विधि बताते हैं।

(7) यदि परिस्थितियों का तांता लग जाये तो किसी भी अन्य मनुष्य द्वारा कोई स्थायी मदद नहीं मिल सकती क्योंकि आज सभी के पास समस्याएँ तो हैं परन्तु समाधान नहीं। ऐसे में यदि एक परमपिता परमात्मा शिव से सीधा संबंध जोड़ा जाये और सब कुछ उसके हवाले कर दिया जाये तो परिस्थितियाँ प्रभावहीन हो जाती हैं। शिव के प्रति निश्चय से सुरक्षा-कवच भी प्राप्त होता है और स्वदर्शन-चक्र रूपी कुण्डल भी। मनसा-वाचा-कर्मणा पवित्र रहना, सुरक्षा-कवच धारण करना है और नित्य ईश्वरीय महावाक्यों का कानों से श्रवण करना, स्वदर्शन चक्र रूपी कुण्डल धारण करना है। ये कवच-कुण्डल अभेद्य होते हैं।

सतयुग में मनुष्य 24 कैरेट गोल्ड समान थे लेकिन इस समय परिस्थितियों के हिचकोलों ने उन्हें तीन वर्गों में वर्गीकृत कर दिया है –

1. जुझारू, दृढ़ निश्चयी या महारथी – परिस्थितियाँ इनका परिवर्तन चमकदार हीरे के रूप में कर रही हैं।

हीरे का निर्माण लंबे समय के अत्यधिक ताप व दबाव से होता है।

2. मुकाबले का प्रयास करने वाले घुड़सवार – ये कम चमक वाले छोटे हीरे समान हैं।

3. कमजोर, पलायन करने वाले – इनका आज का पलायन, इन्हें सतयुग व त्रेतायुग से भी पलायन करायेगा।

तो देखने की बात यह है कि क्या मैं महारथी आत्मा हूँ या घुड़सवार हूँ या किनारे खड़ी भाग्यहीन आत्मा हूँ। परिस्थितियों का मुकाबला करने वाले को वर्तमान में बेचैनी व कष्ट का अनुभव हो सकता है और परिस्थितियों से समझौता या पलायन करने वाला वर्तमान में सुख प्राप्त कर सकता है परन्तु 'जद्दो जहद का इजतिराब (बेचैनी), फरार के सुकून से बेहतर है।'

यदि उपरोक्त सभी बातों का सार

निकाला जाये तो यह बात स्पष्ट होती है कि इस अनादि मनुष्य-सृष्टि को अनादि-अविनाशी स्वरूप प्रदान करने में परिस्थिति की मुख्य भूमिका है। परिस्थितियों के प्रति सीमित, अपरिपक्व व विवेकहीन नजरिया और रूढ़िवादी, भौतिकवादी सोच ही इसे अभिशाप समझने की भूल कर सकती है। यदि जीवन में उथल-पुथल मची है तो मात्र कुछ वर्षों की घटनायें 'कारण-निवारण' प्रस्तुत नहीं कर सकती। ऊँचाई पर जाने पर ही अर्थात् बेहद की दृष्टि से ही सब कुछ स्पष्ट नजर आयेगा। ऊँचा उठकर पूरे कल्प के घटनाक्रम से वर्तमान को जोड़ कर देखना होगा और जो दिखाई देगा वह परिस्थितियों का एक अनूठा कल्याणकारी स्वरूप होगा। वास्तव में परिस्थिति एक अभिशाप नहीं बल्कि एक अमूल्य वरदान है। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी

कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा

(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)

दिनांक : 10 से 14 जून, 2010

सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन

(Trained in U.K., Australia and Germany)

पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 फैक्स : 238570

ई-मेल : drmurlidharsharma@gmail.com

वेबसाइट : www.ghrc-abu.com

संशय के बादल छंट गये

• ब्रह्माकुमार बालकृष्ण, नागपुर

ज्ञान में आने के पूर्व मुझमें भक्ति के कड़े संस्कार थे, इतने कि भगवान को भोग लगाये बगैर मुख में पानी भी नहीं डालता था। अपने गुरु श्री पाचलेगावकर महाराज की सेवा में मैं 34 साल रहा। उनके शरीर छोड़ने के एक महीना पहले मैंने उनसे पूछा, 'आपके जाने के बाद मैं कहाँ जाऊँगा? अगर आपको ईश्वर मिला है तो क्या आप मुझे उसके दर्शन करा सकते हैं?' इन प्रश्नों को वे टाल गये और भगवान शिव की भक्ति के लिए मुझे प्रेरित किया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बारे में मैं थोड़ा-थोड़ा जानता था, जब मैंने वहाँ जाने की अनुमति माँगी तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। इसके बाद मैं इस विद्यालय से जुड़ गया।

शुरू-शुरू में मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सेवा करना ही अच्छा लगता था। ज्ञान-योग-धारणा में विशेष रुचि नहीं थी। मुरली भी कभी मन करे तो सुनता था। तकरीबन दो सालों तक मुझे पक्का निश्चय ही नहीं हुआ कि स्वयं निराकार परमात्मा शिव यहाँ आकर पढ़ाते हैं। मैं आश्रम में आने-जाने वाले और वहाँ रहने वाले सभी भाई-बहनों को ऊँची निगाह से देखा करता था। मैं हमेशा खोजने की कोशिश करता था कि यहाँ मेरे से

ज्यादा तपस्वी, सेवाभाव वाला कोई तो होगा जिसका संग करके मैं कुछ अच्छी बातें सीखूँगा। यहाँ स्वयं परमात्मा का संग मिलता है, इसका निश्चय मुझे अभी होने को था।

अलौकिक शक्ति का अहसास

एक दिन मेरे मन में विचार आया कि अगर सचमुच भगवान का अवतरण हो चुका है और वे ही यहाँ आकर पढ़ाते हैं तो वे मेरे मन की बात को भी जान सकते हैं। मेरे मन में था कि जिस बहन को मैं अन्य बहनों से अधिक योगी, तपस्वी और पवित्र मानता हूँ, वही बहन मुझे मधुबन में पार्टी के साथ ले जाने के निमित्त बने। ऐसा ही हुआ। मैं मधुबन गया, मैं बहुत खुश था क्योंकि मेरा संकल्प बापदादा ने पूरा किया था। मधुबन में मैंने पहली बार ईश्वरीय प्रसाद स्वीकार किया और मुझे महसूस हुआ कि यहाँ कोई अलौकिक शक्ति कार्य कर रही है जो मुझे सही राह दिखा सकती है।

मधुबन से आने के बाद भी मेरा मुरली पर पूरा-पूरा अटेंशन नहीं था। योग भी सही नहीं था, इस कारण घड़ी-घड़ी संशयबुद्धि हो जाता था। एक दिन अचानक ख्याल आया कि इस विद्यालय में सारा कारोबार बहनों-माताओं के हाथ में है, मेरा यहाँ टिकना मुश्किल है। मुझे अपने



गुरुजी के आश्रम में चले जाना चाहिए, वहीं मेरा भला है। यह सोचकर मैंने ब्रह्माकुमारी विद्यालय में जाना छोड़ दिया।

मुरली ने जादू किया

एक दिन मैं स्नान कर रहा था, मैंने पहली लोटी सिर पर डाली और मंत्रोच्चार किया, 'शिवपरमात्मै सह अभ्यंगस्नानं करिष्ये' मतलब मैं स्वयं भगवान शिव के साथ स्नान कर रहा हूँ। तभी अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, 'बच्चे, तू छह मास तो आ।' वह आवाज़ मेरे कानों में बार-बार गूँजती रही। मैंने फिर से आश्रम जाने का मन बनाया। मुरली क्लास में बैठा तो मुरली में बाबा के महावाक्य थे कि कम से कम छह मास तक रेग्यूलर ज्ञान-योग करने से अनुभूति होगी। ये महावाक्य चौंकाने वाले थे। मैंने छह मास मुरली की तरफ ध्यान दिया, सेवा कम कर दी, इस तरह छह मास बीत गये। मैंने सोचा, छह मास

का वायदा था, पूरा हुआ, अब विद्यालय में नहीं जाना है लेकिन बाबा को मंजूर नहीं था। स्नान करने के वक्त फिर वही आवाज़ आई, 'बच्चे, और छह मास आओ।' फिर से मेरा विद्यालय में आना शुरू हुआ। इस बार बाबा की मुरली ने ऐसा जादू किया कि बुद्धि के सारे कपाट खुल गये। मेरा सारा ध्यान ज्ञान-योग की तरफ केंद्रित हो गया। भक्ति के संस्कार ढीले हो गये, मैं ज्ञानामृत का आनंद लेने लगा और साथ-साथ निश्चय भी होने लगा।

आखिर वह था कौन?

कुछ ही दिनों बाद मुझे एक बहुत अनोखा अनुभव हुआ। वर्धा सेंटर की इंचार्ज सावित्री बहन ने नागपुर सेंटर से कुछ आध्यात्मिक साहित्य और ज़रूरी चीज़ें मंगवाई थीं। मुझे जाने के लिए कहा गया। एक बी.के. भाई ने सारा सामान शाम को सात बजे लग्जरी बस में डालकर मुझे वर्धा के लिए रवाना किया। बस में मेरी एक युगल से पहचान हुई जो वर्धा से थोड़ा पहले उतरने वाले थे। कंडक्टर ने गलती से उस युगल के साथ मुझे भी उतार दिया। तब रात के 8.30 बजे थे। बहुत गहरा अंधियारा था। उस भाई ने मुझे कहा, 'आपको यहाँ नहीं उतरना चाहिए था, आपका आश्रम तो यहाँ से ढाई-तीन किलोमीटर है, इतनी रात गये अभी कोई साधन भी नहीं मिलेगा' और ऐसा कहकर वे

अपने गंतव्य की ओर चले गये। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। मुझे पसीना आ गया। तभी ऊपर से बूँदाबांदी होने लगी। मैं और डर गया क्योंकि उस अनजान रास्ते पर सामान को साथ लिए अकेला खड़ा था। मंज़िल का भी पता नहीं था। इसके पहले सिर्फ एक बार ही वर्धा सेंटर पर गया था। जल्दी-जल्दी में मैंने सामान को उठाने की कोशिश की लेकिन जल्दबाज़ी में मैं दो बार ज़मीन पर गिर गया। सामान मेरे से ज़्यादा वज़नदार था। मैं बहुत हताश हो गया। मन में चिंता थी, अब कहाँ जाऊँ और सामान सेंटर तक कैसे पहुँचाऊँ? मैं नीचे बैठ गया और मन में कहा, यह सब बाबा का है, मेरा कुछ भी नहीं है, बाबा जाने, बाबा का काम जाने। मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया, अब प्राण जाएँ तो बेहतर है, मैं यहाँ से हटूँगा नहीं। दस-पंद्रह मिनट हुए होंगे, अचानक अंधेरे में से आवाज़ आई, अरे बेटा, यहाँ पर कौन है? मैंने अनायास कहा, बाबा, मैं हूँ। मुझे धीरज मिला। मैंने देखा, एक बुजुर्ग व्यक्ति बंगाली कुर्ता और धोती पहने हुए, हाथ में पुरानी साइकिल पकड़े खड़ा था। मैंने सोचा, यह सेंटर से मुझे लेने आया होगा। अंधेरे में उसका चेहरा मैं देख नहीं सका। उसने कहा, बेटा, सामान साइकिल पर रख दे और तू भी बैठ जा, मैं नजदीक के रास्ते से आश्रम पहुँचा दूँगा। मैंने कहा, बाबा,

आप तो बूढ़े व्यक्ति हो, आप मुझे और सामान को इस पुरानी साइकिल पर कैसे लेकर जाओगे, अच्छा होगा, हम दोनों साथ-साथ चलेंगे। उसने छोटे रास्ते से साइकिल निकाली और जल्दी ही सेंटर आ गया। मेरी जान में जान आ गई। मैंने सामान उतारा। इतने में सावित्री बहन अंदर से बाहर आई। दीदी ने कहा, बालकृष्ण भाई, इतनी रात गये क्या आप अकेले आये हो? मैंने कहा, नहीं दीदी, मेरे साथ एक बुजुर्ग व्यक्ति भी है। दीदी ने कहा, कहाँ है, उसे तुरंत अंदर बुलाओ। मैंने लौटकर देखा, वह बुजुर्ग व्यक्ति गायब हो चुका था। दीदी ने पूछा, वह कौन था? यह प्रश्न सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। आखिर वह भला मनुष्य था कौन?

मेरा मन बार-बार कहता है – वे स्वयं बाबा थे या बाबा द्वारा निमित्त बनया गया कोई व्यक्ति? अंधेरे की वजह से मैं उन्हें पहचान न सका। आश्चर्य की बात यह भी है कि चलते-चलते हमने बहुत बातें भी की थी लेकिन उनमें से एक भी बात मुझे याद नहीं आती। यह अनुभव मेरे लिए बहुत-बहुत-बहुत अनमोल है। इस घटना से मैं बाबा के प्रति, बाबा के कार्य के प्रति पूरा-पूरा समर्पित हो गया। मेरे संशय के बादल हट गये और ज्ञान का सूरज मेरी बुद्धि में चमकने लगा। ❖

शान्ति और विकास

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी ने कहा था – यह एक दुर्भाग्य की बात है कि हम युद्ध की तैयारी से ही शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे विश्व युद्ध के बाद संसार के लिए 'विश्व शान्ति' चिन्ता का बहुत बड़ा विषय बन गयी है क्योंकि अभी तक भी शीत युद्ध, जातीय युद्ध और शस्त्रों की होड़ का सिलसिला जारी है।

शान्ति के लिए हथियारों की होड़

दूसरे विश्व युद्ध के बाद विश्व में चल रहे संघर्षों को रोकने और शान्ति एवं विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गयी। लेकिन पिछले छह दशकों में एक भी ऐसा वर्ष नहीं बीता होगा कि जब विश्व में छोटे-मोटे युद्ध नहीं हुये हों। यह एक कटु सत्य है कि आज भी इस सृष्टि पर 40 से अधिक देशों में कहीं-न-कहीं युद्ध हो रहे हैं और कुछ युद्ध तो वर्षों से चले आ रहे हैं।

आज धर्म के नाम पर भी कितने युद्ध हो रहे हैं। अतः शान्ति बनाये रखना एक बहुत मुश्किल कार्य हो गया है। हालाँकि आज यू.एन. कई देशों में शान्ति बनाये रखने के लिए शान्ति सेना तैनात करता जा रहा है। फिर भी शान्ति रूपी चिड़िया जैसे कोसों दूर भाग गयी है। किसी ने कहा

• ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत

है कि शान्ति इतिहास में वह मजेदार क्षण है जिसमें सभी अपने आपको शस्त्रों से लैस करने में लगे हुये हैं। हँसी की बात तो यह है कि शान्ति के लिए हथियारों की होड़ चल रही है। अधिकांश विकसित देश अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने के लिए आणविक अस्त्रों-शस्त्रों को और भी एकत्रित करते जा रहे हैं। शस्त्र बनाने वाले देश अपनी आवश्यकता से अधिक शस्त्रों का निर्माण कर छोटे-छोटे देशों को बेचते रहते हैं ताकि वे देश अपने पड़ोसी दुश्मन देश से लड़ सकें। उसके बाद वे ही देश और आधुनिक हथियार उन दोनों दुश्मन देशों को बेचते हैं और दोनों से मुनाफ़ा कमाते रहते हैं। इससे कई देशों के बीच में कई सालों तक युद्ध चलते रहते हैं। सच्चाई यह है कि शान्ति की बजाय विश्व में हथियारों की खतरनाक होड़ चल रही है जिससे आज मौत का बाज़ार गर्म हो रहा है। आतंकवाद का साया इस होड़ को और भी गहराता जा रहा है। अनेकानेक निर्दोष लोगों की हत्यायें इस तरह से हो रही हैं कि लगता है कि मौत बिल्कुल सस्ती हो गयी है।

विकासार्थ धन,

लग रहा है सुरक्षा पर

युद्ध हो या न हो परन्तु आज शान्ति एक महँगा कारोबार सिद्ध हुआ है।

इस टुकड़े-टुकड़े हुये संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए कितना समय, शक्ति, धन, संसाधन और मनुष्यों की बलि चढ़ रही है। बन्दूकों के साये में हम किस प्रकार की शान्ति का आनन्द ले रहे हैं, यह भी एक विचारणीय विषय है। ATM यानी Any Time Money की तरह आज ATW अर्थात् Any Time War भी वास्तविकता बन गयी है। आज हमें हर बात के लिए सुरक्षा सैनिक रखने पड़ रहे हैं। घर के बाहर, दफ्तर के बाहर, कारखानों के बाहर, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट यहाँ तक कि बसों एवं ट्रेनों में भी सुरक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। कहीं भी, कभी भी कुछ भी हो सकता है। व्यक्ति का व्यक्ति से विश्वास उठता जा रहा है। ऐसी स्थिति के कारण हर देश को अपने बजट में सुरक्षा पर अत्यधिक धन लगाना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप, जो धन विकास अर्थात् स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी सुविधाओं, शोध, आर्थिक प्रगति, कृषि आदि पर लगाना चाहिये, वह आज सुरक्षा पर लगाया जा रहा है। इसीलिये जो विकास हम चाहते हैं, वह नहीं हो पा रहा है।

इस धरा पर कभी वह भी समय था कि जब लोगों को अपने घरों में ताले लगाने की भी आवश्यकता नहीं होती थी। इतना आपसी विश्वास हुआ करता था। परन्तु आज के हालात को देखकर एक गीत याद आ रहा है – “देख तेरे संसार की हालात

क्या हो गयी भगवान, कितना बदल गया इंसान।” तो अब समय आ चुका है कि हम अपने आपसे पूछें कि शान्ति प्राप्त करने के लिए हमें और कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी? और क्या इसके लिए सचमुच इतनी कीमत देने की आवश्यकता है? इसका जवाब हमें ढूँढ़ना होगा।

विश्व शान्ति से पहले व्यक्तिगत शान्ति

कहा गया है कि युद्धस्थल पर युद्ध शुरू होने से पहले वह मन में शुरू होता है। इसी प्रकार शान्ति भी विश्व में आने से पहले, मन में आती है। जिस प्रकार बूँद-बूँद से सागर बनता है इसी प्रकार व्यक्तिगत शान्ति से ही विश्व में शान्ति आयेगी। व्यक्ति में शान्ति आने से परिवार में शान्ति आयेगी, परिवार में आने से समाज में आयेगी, समाज में आने से देश में आयेगी और देश में शान्ति आने से पूरे विश्व में शान्ति स्थापित हो जायेगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि सबसे पहले व्यक्तिगत शान्ति का अनुभव किया जाये। मन में शान्ति पाने के लिए हमें अपने अन्दर प्रेम, विश्वास, सहिष्णुता, सत्यता, सम्मान, सहयोग, नम्रता आदि मूल्यों का विकास करना होगा। और इन मूल्यों के विकास के लिए जीवन में आध्यात्मिकता को स्थान देना होगा क्योंकि आध्यात्मिकता के अभाव से ही सारे मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं जिससे यह संसार नर्क बनता

जा रहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, अलबेलापन, स्वार्थ, लालच, जलन, छल, कपट, निंदा, चुगली, बेईमानी, हेराफेरी, बदले की भावना आदि-आदि अनेकानेक विकृतियों की विषमताओं के जाल में मनुष्य फँसता जा रहा है, परिणामस्वरूप, वह जीवन में दुःख और अशान्ति का ही अनुभव करता रहता है। यदि हम जीवन में शान्ति चाहते हैं तो आध्यात्मिकता को जीवन में स्थान देना ही होगा। यही एक ऐसी कड़ी है जिसका अभाव ही सभी समस्याओं का कारण है। आध्यात्मिकता क्या है, हमें इसे समझना होगा।

शान्ति के चिन्तन से मिलेगी शान्ति

आध्यात्मिकता धर्म से महान है। आध्यात्मिकता अर्थात् आत्मा का अध्ययन यानि यह समझना – हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? क्यों आये हैं? जीवन का लक्ष्य क्या है? हमें क्या करना है और कहाँ जाना है आदि-आदि। आध्यात्मिक ज्ञान कहता है कि शान्ति तो आप आत्मा का स्वधर्म है। शान्ति तो आपके भीतर ही निवास करती है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि जो शान्ति हमारे भीतर है, हम उसे बाहर ढूँढ़ रहे हैं। शान्ति तो हमारी सोच में है। अगर हम शान्ति का चिन्तन करेंगे तो हम शान्ति का ही अनुभव करेंगे। अगर अशान्ति का

चिन्तन करेंगे तो अशान्ति का अनुभव करेंगे। इसीलिये किसी ने ठीक ही कहा है – आप वही हैं जो आप सोचते हैं और आप जो सोचते हैं वही आप बन जाते हैं। तो शान्ति हमसे कितनी दूर है? वास्तव में शान्ति तो केवल हमारे एक विचार की दूरी पर है, वह हमारे गले का हार है। ‘ओमशान्ति’ वह महामन्त्र है, जो हमें शान्ति की अनुभूति कराता है। हम इस देह से भिन्न एक अजर-अमर-अविनाशी चैतन्य शक्ति आत्मा हैं जो कभी न जलती, न गलती, न सूखती है। यह आत्म-निश्चय ही हमें आत्म-बोध करायेगा और हम अपने जीवन में तो शान्ति का अनुभव करेंगे ही करेंगे, साथ-ही-साथ दूसरों को भी शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। इसी से जीवन में भी विकास होगा। हम व्यसनों से मुक्त हो सकेंगे क्योंकि आत्म अनुभूति से आत्म विश्वास बढ़ेगा और हमें स्वयं का सच्चा बोध होगा। जीवन की पहली का हल मिल जायेगा। जीवन संघर्ष की बजाय एक वरदान बन जायेगा, प्रभु-प्रसाद बन जायेगा। इससे हमारा व्यक्तिगत विकास तो होगा ही साथ-साथ परिवार, समाज, देश और विश्व का भी विकास होगा। मानव देवतुल्य बन जायेगा और यह संसार नर्क से बदल स्वर्ग बन जायेगा। ❖

सर्वस्व त्यागी बनने से ही सरलता
और सहनशीलता का गुण आयेगा

आवश्यक सूचना (सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. आपको ज्ञात ही होगा कि जुलाई मास से 'ज्ञानामृत' एवं 'The World Renewal' का नया वर्ष आरंभ हो रहा है। इस नये वर्ष में पेपर के रेट में वृद्धि के कारण 2010-11 से पत्रिकाओं का वार्षिक शुल्क 80 रुपये एवं आजीवन 2,000 रुपये तथा विदेशों का वार्षिक शुल्क 750 रुपये एवं आजीवन 8,000 रुपये रहेगा।
2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'ज्ञानामृत' या 'The World Renewal' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिस द्वारा उसी दिन 10 मिनट के अंदर भारत के किसी भी कोने से पत्रिकाओं की राशि शान्तिवन डाकघर में पहुँच जाती है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर जरूर लिखें।
3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच शान्तिवन में है, अतः कोई भी ड्राफ्ट शान्तिवन, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) के नाम से ही भेजें। बैंक का कोड नं. 10638 है। इसी नं. से शान्तिवन ब्रांच के नाम से ड्राफ्ट बनवायें और किसी भी दूसरे बैंक का ड्राफ्ट न बनवायें। केवल स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शान्तिवन ब्रांच का ही ड्राफ्ट बनवायें।
4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल 'ज्ञानामृत, शान्तिवन' या 'The World Renewal, Shantivan' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।
5. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते कृपया टाइप करके या बड़े अक्षरों (Capital Letters) में साफ-साफ भेजें।

संपर्क के लिए

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।
फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116
मोबाइल : 09414006904, 09414423949, E-mail : omshantipress@bkivv.org

विशेष सूचना (ग्लोबल हॉस्पिटल)

ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, माउंट आबू में पेनक्रियाज तथा पेट के जटिल ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध:

निम्नलिखित बीमारी से ग्रस्त मरीज इस सुविधा का अवश्य लाभ लें:-

1. पेनक्रियाज के कैंसर तथा क्रॉनिक पेनक्रीयटाइटिस, 2. लीवर के कैंसर एवं दूसरी गाँठें, 3. बड़ी आँत के कैंसर तथा खून के दस्त के ऑपरेशन, 4. आमाशय (स्टमक) के कैंसर एवं एसिडिटी से संबंधित ऑपरेशन, 5. इसोफेगस (आहार नली) के कैंसर के ऑपरेशन, 6. पेट के अधिकतर ऑपरेशन दूरबीन (लैप्रोस्कोपिक) विधि से जैसे कि पित्ताशय की पथरी, अपेन्डिक्स, विभिन्न प्रकार के हार्निया, आंती की गाँठ, रसौली आदि।

ग्लोबल हॉस्पिटल के प्रमुख पेट रोग सर्जरी विशेषज्ञ एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ. दिलीप कोठारी (एम.एस., एफ.आर.सी.एस.) ने सर गंगाराम हॉस्पिटल, नई दिल्ली तथा सर एच.एन. हॉस्पिटल मुंबई से पेट रोग सर्जरी की ट्रेनिंग प्राप्त की है। आपको पेट रोग सर्जरी तथा लैप्रोस्कोपिक सर्जरी का 15 साल का अनुभव प्राप्त है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें – 09413775349

मुस्कुराने की आदत डालिए

• ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

आज, आपाधापी और भौतिकता की अंधी दौड़ में भागते इंसानों के चेहरे हर्षित नहीं रह पाते हैं। अगर हर्षित होते भी हैं तो अल्पकाल के लिए। विपरीत परिस्थितियाँ आते ही पुनः मुरझा जाते हैं।

आज अनेक प्रकार के सीरियल भौडी अश्लीलता का पुट लिये ज़बरदस्ती हँसाने का प्रयास कर रहे हैं और महानगरों में बने लाफिंग क्लब मानव के चेहरे पर ज़बरदस्ती हँसी लाने का अल्प प्रयास कर रहे हैं परन्तु वह असली मुस्कान कहाँ? असली मुस्कान दिखती है दैवी प्रतिमाओं के मुखारविन्द पर जिसे देख मानव चिन्ता, ग़म भूल जाता है। असली मुस्कान दिखती है अबोध बच्चे के फूल से खिले चेहरे पर जो मन को सच्चा सुकून दे जाती है। जैसे दीपक की बाती में चाहे कितनी भी रोशनी हो पर उस पर लगे ग्लास-आवरण पर यदि मिट्टी या कालिमा लगी हो तो वह प्रकाश मैले ग्लास से अवरुद्ध हो जाता है, पूर्णरूपेण बाहर नहीं फैल सकता। इसी प्रकार, जब तक मन में छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की कालिमा है तब तक आत्मा की खुशी अवरुद्ध होती रहेगी और चेहरे पर मुस्कराहट आयेगी नहीं।

यूँ तो हँसी कई प्रकार की होती

है। किसी को सताकर, तड़पाकर जो दाँत दिखाये जाते हैं वह राक्षसी अट्टहास होता है। किसी आती-जाती कन्या पर छींटाकशी करके अश्लील हरकतें करके जो दाँत निपोरे जाते हैं वह दुर्योधन-दुशासन जैसी अहंकार भरी और कालान्तर में विनाश भरी हँसी होती है। किसी के त्याग, तप, सेवा, सादगी पर हँसना अल्पकाल का मज़ा और सदाकाल की सज़ा समान होता है। किसी की वृद्धावस्था, निर्धनता, अपंगता, बेबसी पर हँसना – आते हुए काल की अनदेखी कर कबूतर की तरह कुछ पल मौज मनाने जैसा होता है।

किसी भी व्यक्ति के अभावों से भरे जीवन या असमर्थता पर हँसना तो एकदम अज्ञानता ही है। इतिहास साक्षी है कि संसार में रंक से राव बनने में और राव से रंक बनने में बहुत अधिक समय नहीं लगता। लक्ष्मी एक ही स्थान पर सदा निवास नहीं करती और इसके अलावा किसी कारण से यदि कोई अभावग्रस्त है तो ऐसी दुर्घटनायें तो किसी के साथ कभी भी हो सकती हैं। जो हँसी हम दूसरों पर हँस रहे हैं, वैसी ही हँसी अपने ऊपर भी लागू करके देखें तो पता चलेगा कि किधर दर्द हुआ!

हँसने से अनेक द्रव्य मस्तिष्क में प्रवाहित होते हैं जो हमें अनेक

बीमारियों से बचाते हैं और तंदुरुस्त रखते हैं। हम चाहते हैं, छोटी-सी इस ज़िन्दगानी में सभी हँसें, गायें, मुस्करायें पर यह मुस्कान निश्छल और निर्मल हो। हाथरस में हास्यरस कवि काका हाथरसी हुए हैं। वे जीवनपर्यन्त लोगों को हँसाते ही रहे। शरीर छोड़ने के बाद उनकी चिता के नज़दीक बहुत बड़ा हास्य कवि सम्मेलन भी हुआ। एक ओर चिता जल रही थी तो दूसरी ओर लोग हँस रहे थे।

यदि किसी ने हमें तंग किया है और आज वह संकट के क्षणों से गुज़र रहा है या दुखों के बादलों में फँस गया है तो हम भी यदि अपनी साधुता या मानवीयता को भूलकर उसके ऊपर हँसते हैं या बाहर तो किसी से नहीं कहते पर अन्दर में भी यह संकल्प करते हैं कि अब मज़ा आयेगा, अब पता चलेगा बच्चू को .. तो यह संकल्प भी दुख देने और बदला लेने की भावनाओं में शामिल हो जाता है।

फिर भी, यदि हम जीवन में सदा हँस नहीं सकते तो कम से कम मुस्कराहट तो चेहरे पर लायें, मुस्कराने में तो कौड़ी भी खर्च नहीं होती और मर्यादित मुस्कराहट दिलाने का लघु प्रयास तो करें। यह मुस्कराहट भी अनेक समस्याओं से निजात दिलाकर दुआओं के खज़ाने से भरपूर करेगी। किसी ने कहा है –

ऐ ग़मे ज़िन्दगी नाराज़ न हो,
मुझको आदत है मुस्कराने की।

